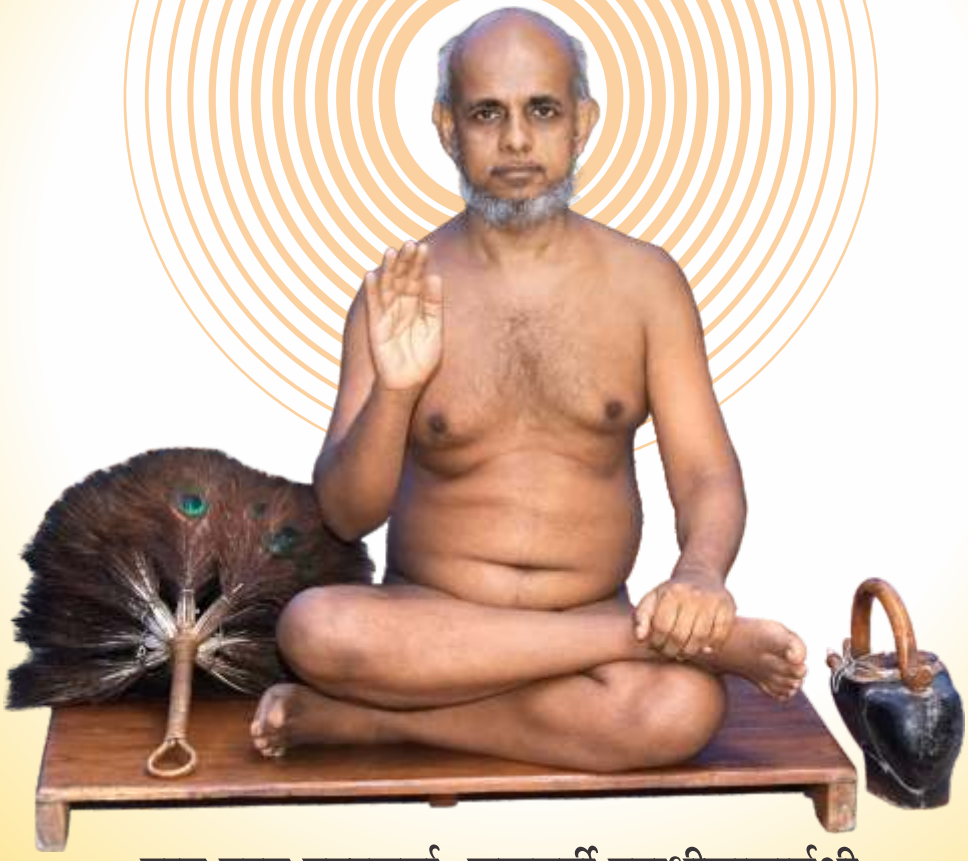

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद
श्री कल्याणमन्दिर
स्तोत्र विधान

कृतिकार :

परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर,

कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

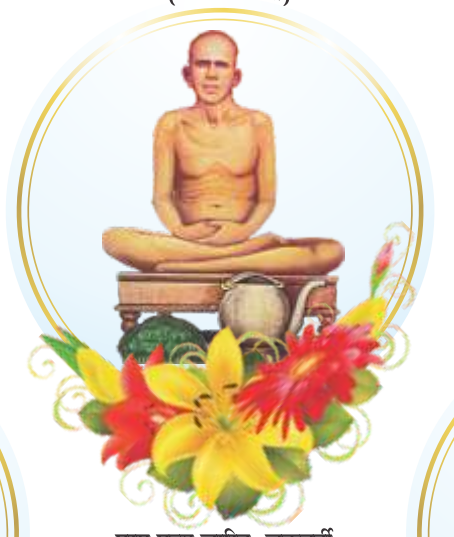

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्रीमद् कुमुदचन्द्राचार्य कृत

विशद

श्री कल्याण मन्दिर

स्तोत्र विधान (संस्कृत)

माण्डला

मध्य में	– ॐ
प्रथमवलय में	– 8
द्वितीय वलय में	– 16
तृतीय वलय में	– 24
कुल :	**48 अर्घ्य**

संकलन सम्पादन एवं रचना :

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

कृति : **श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र विधान**
रचयिता : श्री कुमुदचन्द्राचार्य
संकलन एवं सम्पादन :
: **प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर जी महाराज**
सहयोगी : मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज, आर्यिका भक्तिभारती माताजी, ऐलक श्री विदक्ष सागर जी, क्षु. श्री विसोम सागर जी, क्षु. वात्सल्यभारती माताजी
ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), ब्र. आस्था दीदी (9660996425), ब्र. सपना दीदी (9829127533) ब्र.आरती दीदी (8700876822), ब्र. प्रदीप भैया
संस्करण : प्रथम संस्करण 2018
प्रतियाँ : 1000 प्रतियाँ
मूल्य : 21/- रुपये (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थल : (1) **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062
(2) **हरीश जैन,** जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 09136248971
(4) **सुरेश जैन,** पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर,
दुर्गापुरा, जयपुर, मो. 9413336017

पुण्यार्जक :
श्रीमती रेखा जैन धर्मपत्नी श्री सुभाष चंद जैन
ए/3/5 सैक्टर-16, जैन मंदिर के पास, रोहिणी, दिल्ली-85

e-mail : vishadsagar11@gmail.com, APP : vishadsagarji
web : www.vishadsagar.com
प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र**
मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर,** हेमन्त जैन -9509529502

अपनी बात

कर्मातिविघातको जिनवरः शाक्रादि देवार्चितः।
सर्वज्ञस्सुखदायको गुणनिधिर्भव्याब्जिनीभानुमान।।
संसारार्णवतारको भवभृतां सदभाक्तिभाजा सदा।
भूयान्मोक्षपदाप्तये च भवतां कल्याणवल्लीनघः।।

कर्म दुख प्रदायक हैं, विशद गुणनिधि वाले जिनेन्द्र शक्रादिक से पूज्य हैं ऐसे सर्वज्ञ सर्व सुख प्रदायक हैं विशद गुणनिधि स्वरूप तथा भव्य जीवों के लिए प्रकाशित करने वाले पावन सूर्य हैं। भव्य जीवों को भव से पार करने के लिए जिनकी भक्ति पोत की भांति हैं ऐसे जिनेन्द्र की भक्ति हमारे एवं आप सबके के लिए मोक्ष प्राप्ति में साधक हो तथा कल्याणकारी हो।

जैन समाज में भक्तामर स्तोत्र के प्रति लोगों की अगाध श्रद्धा है। लोग प्रतिदिन पाठ करके एवं समय-समय पर विधान करके पुण्यार्जन करते हैं, उसी प्रकार कल्याण मंदिर स्तोत्र भी अत्यन्त चमत्कारिक एवं विशिष्ट फलदायी है कई स्थानों पर लोग इसका भी पाठ करते हैं तथा हिन्दी में पूजा विधान भी करते हैं; किन्तु अभी तक संस्कृत में पूजा विधान कभी देखने में नहीं आया अत: मेरा भाव हुआ कि भक्तामर के समान कल्याण मंदिर विधान भी संस्कृत की पूजा एवं यंत्र मंत्र सहित लोगों तक पहुँचे जिसके द्वारा भव्य जीव जीवन में उसके चमत्कारिक लाभ को प्राप्त कर सकें इसलिए विभिन्न स्थानों से पूर्वाचार्यों द्वारा रचित पूजा स्तोत्रों का संकलन किया एवं कुछ विषय हीनता को पूर्ण करने के लिए मैंने अल्पबुद्धि से श्लोकादि की रचना की यद्यपि हिन्दी में पद्य रचनाएँ बहुत की हैं जो विद्वानों द्वारा सराही गईं, संस्कृत रचना में मेरा प्रथम प्रयास है; शायद लोगों को पसन्द आए और अर्चा करके धर्मलाभ ले सकें यही मेरी भावना है, इसमें प्रत्यक्षपरोक्ष से जिसने सहयोग दिया वे सभी आशीर्वाद के पात्र हैं।

- आचार्य विशदसागर

मगलाष्टक

अरहंतो भगवंत इन्द्र महिता सिद्धाश्चसिद्धीश्वराः।
आचार्याजिनशासनोन्नतिकरा पूजा उपाध्याय काः।।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पंचैतेपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।
श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुट - प्रद्योतरत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाऽम्बोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।1।।
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्ति श्रीनगराऽधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम।।2।।
नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिसू-
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिपष्टि पुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मगलम्।।3।।
देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश येत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।4।।
ये सर्वौषधिऋद्धयः सुतपसो वृद्धिगंताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्त कुशला श्चाष्टौवियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनीवराः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतमही वीरस्य पावापुरे
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।6।।
ज्योतिर्व्यन्तरभावानाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थितः,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।7।।
यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।8।।
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।9।।

।। इति मंगलाष्टकः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पञ्चाचार परायणाः सुमुनयाः रत्नत्रयाराधकाः।
द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन पराः दश धर्म संराधकाः।।
समता वन्दन स्तुति प्रतिक्रमण, स्वाध्याय ध्याना पराः।
आचार्यं त्रय लोक पूजित पदं, वन्दे विशदसागरम्।।

हस्त प्रच्छालन मंत्र

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिं सर्वांगशुद्धिः भवतु।
ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वविघ्न निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।
(नौ बार णमोकार मंत्र का पढ़े)

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

अमृत शुद्धि मंत्र

मनः प्रसत्यै वचसः प्रसत्यै काय प्रसत्यै च कषाय हानिः।
सैवार्थतः स्यात्सकलीक्रियान्या मन्त्रैरुदारैः कृतिकल्पनांगा।।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षाणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः स्वाहा। (इस मंत्र से जल को मंत्रित कर शरीर पर छिटककर शुद्धि करें।)

दिग्बन्धन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्व दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमोउवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थल रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(सरसों को सात बार मंत्रित कर परिचारकों पर क्षेपण करें।)

(पश्चात् मण्डप पर श्री जी एवं कल्याण मंदिर अथवा विनायक यंत्र विराजमान करें।)

शांति मंत्र : ॐ क्ष्रूं ह्रूं फट् किरीटं-किरीटं घातय-घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु, परमुद्रां छिन्द-छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द, क्षां क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।
ॐ क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप शुद्धिं कुर्मः।

।। पुष्प क्षेपण करें।।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्तत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारे परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्र।।

मन्त्रः - ॐ अनादिपरंब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुः शरणायनमो नमः-- अस्य विधान--नामधेयं श्री--- यजमानस्य सपरिवारे वर्धस्व-वर्धस्व, विजस्य-विजस्य, भवतु-भवतु सर्वदा शिवं कुरु कुरु।

।। पुष्प क्षेपण करें।।

मण्डप प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा। (मण्डप पर जल से शुद्धि करें)
भो चतुर्णिकाय देवाः! स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।
भो! पूर्व दिशा/विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने...
भो! दक्षिण दिशा/विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने...
भो पश्चिम दिशा/विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने...
भो उत्तर दिशा/विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने...

भो वातकुमार देवाः! अग्निकुमार देवाः! वास्तुकुमार देवाः! मेघकुमार देवाः! नागकुमार देवाः! स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ स्व नियोगं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रीं: ह्रूं: ह्रौं: ह्रः जिन मण्डप स्थले धरित्री जाग्रते अवस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र : ॐ नमः परमशान्ताय शांति कराए रत्नत्रय स्वरूप यज्ञोपवीतं धरयामि मम गात्र पवित्रं भवतु।

कलश में सामग्री रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशं मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश पर श्री फल रखने का मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षें क्षैं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्व रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री (विधान) महामण्डल विधान कार्यं। .....श्री वीर निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं पात्राशुद्धयर्थं, शन्त्यर्थं पुण्याह-वाचनार्थंनवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादशिोभितं शुद्धप्रासुक-तीर्थजल-पूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं ह्रवीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोंण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिंगंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तोसुदणाण-महोवहिंसिरसा।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोदभूत रत्नत्रय स्वरूप जिन शास्त्र स्थापयामि स्वाहा।

अभिषेक विधि प्रारम्भ

इदानीम - अभिषेक विधिः समभिधीयते
संसाध्याखिल कल्याण, मालोद्वेलोयः श्रियम्।।
कलिकुंडमखण्डात्माभीष्ट मारोपयाम्यहम्,
अनेनाह्वानन स्थापनं सन्निधीकरणानि कुर्यात्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन् अतुल बल वीर्य पराक्रम अत्रावतर अवतर अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव-भव संवौषट् हुं फट् स्वाहा।

अभिषेक पाठ

(श्री माघनन्दी मुनि कृत)

श्रीमन्नतामर शिरस्तटरत्नदीप्ति, तोयावभासि चरणाम्बुज युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत पद प्रदमाभिनम्य, त्वन्मूर्ति-षूद्यदभिषेक विधिं करिष्ये।।1।।

अर्थ- पौर्वाह्णिक/माघयाह्णिक/अपराह्णिक देव वन्दनायां पूर्वाचार्यानु क्रमेणा सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दनास्तव समेतं श्री पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।ह्व

(27 श्वासोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरणा करें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाजिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः।
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि।।2।।

इति अभिषेक प्रतिज्ञा करोमि (पुष्प क्षेपण करें)

जन्मोत्सवादि-समयेषु यदीवकीर्ति
सेन्द्राः सुराप्तमदवारणगाः स्तुवन्ति।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पाञ्जलिं मलयजात-मुपाक्षिपेऽहम्।

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञानाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

श्रीकार लेखन

श्री पीठक्लृप्ते ''विशदाक्षतौघैः'', श्री प्रस्तरे पूर्ण शशांककल्पे।
श्री वर्तके चन्द्र मसीतिवार्तां, सत्यापयंतीं श्रियमालिखामि।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोम्यहम्।

पीठ स्थापन

कनकाद्रिनिभं कम्रं, पावन पुण्य कारणम्।
स्थापयामि पर पीठं, जिनस्नपनायभक्तितः।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पीठ सिंहासन स्थापनं करोम्यहम्। (सिंहासन स्थापित करें)

जिनबिम्ब स्थापन

भृंगार चामर सुदर्पण पीठ कुम्भ, तालध्वजातप निवारक भूसिताग्रे।
वर्धस्वनन्द जय पाठ पदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्त–महं श्रयामि।।
वृषभादि सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णु चर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठै महोत्सवम्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह स्नपनपीठे सिंहासने तिष्ठ–तिष्ठ इति प्रतिमा स्थापनम्। (बिम्ब स्थापन करें)

चार कलश स्थापन

श्री तीर्थकृत्स्नपनवर्य विधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि वारिभि–रपूरय दुद्ध कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम चन्दन भूषिताग्रान।।6।।
शातकुम्भीय कुम्भौघान्, क्षीराब्धेस्तोय पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान, चन्दनादि सुचर्चितान्।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुः कोणेषु चतुकलशास्थापनं करोम्यहम्।।

अर्घ्य

आनन्द निर्भर सुर प्रमदादि गानैर्,
वादित्र–पूर–जय–शब्द–कलशप्रशस्तैः।
उद्गीयमान–जगतीपति–कीर्तिमेनाम्,
पीठस्थली वसु–विधार्चन योल्लसामि।।7।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम कलशाभिषेक

कर्म प्रबन्ध निगडैरपि हीनताप्तम्, ज्ञात्त्वाऽपि भक्तिवशतः परमादि देवम्।
त्वां स्वीय कल्मष गणोन्मथनाय देव, शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थ तत्त्वम्।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

तीर्थोत्तम भवै–नीरैः क्षीरवारिधि रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्माप्तान्, जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार कलशाभिषेक

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटि, संलग्न रत्न किरणच्छविधूसराघ्रिम्।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तिमपि प्रकृष्टैर्,–भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाऽभिषिञ्चे।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रदेशे... जिलान्तर्गते.... नाम्निनगरे.... चैत्यालये (मन्दिर) मण्डपे वीर निर्वाण संवतसरे.... मासानामुत्तमे मासे... पक्षे.... शुभ तिथौ... वासरे शुभघटी लग्ने शुभ... मुहूर्ते मुन्यार्यिकाश्रावक श्राविकाणां सकल कर्म क्षयार्थं चतुः कलशेनाभिषिञ्चयामि स्वाहा।

वृहद् शांति मंत्र

सकल भुवन नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रं,
रभिषव विधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषव वन वारां, बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विदधातुं भक्ति सन्मुक्तिलक्ष्मीम्।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं ध्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्ष क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रों ह्रौं हं हः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति सुगन्धित जलेन बृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेक करोमि।

सुगन्धित कलशाभिषेक

द्रव्यै–रनल्प घनसार चतुः समाद्यै, रामोद वासित समस्त दिगन्त–रालैः।
मिश्री कृतेन पयसा जिन पुंगवानां, त्रैलोक्य पावन–महं स्नपनं करोमि।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर सुगन्धित जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

विनायक यन्त्राभिषेक

अर्हं मंत्रं नमस्कृत्य, रत्नत्रय तपोनिधिम्।
सिद्धयंत्रं स्नपयामि, सर्वोपद्रव शान्तये।।

ॐ ह्रीं श्री विनायक सिद्ध यंत्र च जलेन स्नपयामः।

यन्त्राभिषेक

स्नात्वा शुभांवर धराः कृत यत्न योगात्।
यंत्रं निवेश्य शुचि पीठ वरेऽभिषञ्चेत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वरिह मंगल यंत्र मेतत् विघ्नौपवारकमहं परिषेचयामि।।

अर्घ्य

पानीय चन्दन सद्क्षत पुष्प पुञ्ज, नैवेद्य दीपक सुधूप फलब्रजेन।
कर्माष्टक ब्रजन क्षीर–मनन्त शक्तिं, संपूजयामि महसा महसां निधानम्।।
हेतीर्थपा! निज यशोधवली कृताशाः,
सिद्धौषधाश्च भव दुःख महागतानाम्।
सद्भव्य हृज्जनित पंक कबंध कल्पाः,
यूयंजिनाः सतत शान्तिकरा भवन्तु।।

।। इत्युक्तया शान्यर्थपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।

यंत्र अभिषेक पाठ/पीठ प्रच्छालनं

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम्।
अत्युद्यमुद्यत–महं जिनपादपीठं, प्रक्षालयामि भवसम्भवतापहारि।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

चतुष्कोंण कलश स्थापना

सत्पुरुष दाम्नाप्रविराजितेन, घटेन पूर्णानिसत्पल्लवेन।
सन्मंगलार्थं कलिकुंड देव!, पदाग्रभूमिं समलङ्करोमि।

ॐ ह्रीं सुसज्जितपीठोपरि चतुः कोंणेषु कलश स्थापनं करोमि।

जल स्नपनं

शुद्धेन सरोवर हृद कूप वापी, गङ्गा तडाकादि समाहृतेन।
शीतेन तोयेन सुगंधिनाहं, भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुण्ड यंत्रम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलाभिसेचयामि स्वाहा।

जलाभिषेचयामि

नीरै सुगंधै कलमाक्षशेद्यैः, पुष्पैर्हविर्भिर्वर दीप धूपैः।
भास्वत फलोघैः कलिकुण्ड यस्यै, सम्पूजयाऽभीष्ट फलाद्भक्त्या।।

ॐ ह्रीं हं सः कलिकुण्ड यंत्रे जलमित्यादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोचादि रस स्नपनं (केलारस)

ये चोच–मोचादि सदिक्षुजा ये, द्राक्षा रसालादि फलोद्भवायै।
ऐभिः रसैः स्वै–रमृतोपमानै, भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुंड यंत्रम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर चोचादिरसेन जिनमाभिषेचयामि स्वाहा।

घृत स्नपनम्

गोरोचनापिङ्गल पावनायु–रारोग्य पुष्ट्यादि कृतानराणाम्
आविष्ट्या सघृत धारयाहं, भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुंड यंत्रम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर घृताभिषेचयामि स्वाहा।

दुग्ध स्नपनम्

कुन्दावदातोत्पल सिन्धुवारं, चंद्रांशु मालाद्रव–माहसद्भिः
गव्यैः पयोभिः किमु माहिषैश्च, भक्याभिषिञ्चे कलिकुंड यंत्रम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर दुग्धाभिषेचयामि स्वाहा।

दधि स्नपनम्

ग्राहिष्ठगंधेन कुठार लोढ्य, काठिन्य भाजाकर युग्मकेन।
स्निग्ध सच्चारुतरेण दग्धां भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुंड यंत्रम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर दध्याभिषेचयामि स्वाहा।

कोंणघट स्नपनम्

नीरैऽमीभिन्निर्वियदाप–गंधां, नीतै–र्हिमामोदि–मृतालिवर्गै।
आपूरितैः कोंण घटैचतुर्भि–र्भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुंड यंत्रम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेनाभिषेचयामि स्वाहा।

नीरै सुगंधै कमलाक्षताद्यैः, पुष्पैर्हविर्भिर्वर दीप धूपैः।
भास्वत फलौघैः कलिकुण्ड यस्मै, सम्पूजया–भीष्टफलाद्भक्त्या।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं कलिकुण्डपार्श्वप्रभवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुताहितज्ञामर कर्तिनस्ते, यान्त्यष्ट कर्म क्षयरूप मुक्तिम्।।
भक्त्याभि षिञ्चन्ति भजंति भक्त्या, ये विघ्नयातैः कलिकुंड यंत्रम्।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।। ।।इति कलिकुंडाभिषेक समाप्तः।।

अथाष्ट विद्यार्चनामभिधास्ये

(स्नग्धरा छन्द)

हूंकारं ब्रह्म रुद्धं स्वर परिवृत्तमो–मंतराग्राष्ट ब्रजैस्फूर्जत्–
पाशां कुशाग्रेर्–हभमर धझ ठ स खै खा व सानैश्चपिंडैः।
सवेष्ट्याभीष्ट पुष्ट्याह्यविकलि कलिकुंड समाह्वानयेहं
सेतुंभीमांस्त्रिमाया परिवृत्तम कृद्दौष्टय दुष्टोपसर्गान्।

ॐ ह्रीं श्री जैन बीजं तदुपरि कलिकुंडेति दडांधिपाय स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं स्फ्रौं स्फ्रः इति चतुरस्त्र अध्यात्म विद्यां च रक्ष रक्षेत्यंऽन्यस्य विद्या स्फुरणमनुपमं छिंद–छिंद भिंद–भिंद द्वयाते हूं फट् स्वाहेति मंत्र जयतु द्रढ़मना मना अन्यर्विद्या विनाशे।

मंत्रोद्धार

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रम स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रैं स्फ्रः आत्मविद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद–छिंद भिंद–भिंद हुं फट् स्वाहा।

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः।

धातु पाषाण रचितं बिम्ब, यथा विधि प्रतिष्ठतं।
विशद शांति प्रदायकं स्यात्, शांतिधारा करोयहं।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुर संघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं...** छिंद छिंद भिंद भिंद। मृत्युं छिंद छिंद भिंद भिंद। अति कामं छिंद छिंद भिंद भिंद। रति कामं छिंद छिंद भिंद भिंद। क्रोधं छिंद छिंद भिंद भिंद। अग्नि भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वशत्रु भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वविघ्नं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्वोपसर्गं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व राजभयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व चोर भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व दुष्ट भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व मृग भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व परमत्रं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वात्म चक्र भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व शूल रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व क्षय रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व कुष्ठ रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व क्रूररोगं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व नरमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व गज मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वाश्व मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व गो मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व महिष मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व धान्य मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व वृक्ष मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व गुल्म मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्वपत्र मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व पुष्प मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व फल मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व राष्ट्र मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व देश मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व विष मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व बेताल शाकिनी भयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व वेदनीयं छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व मोहनीय छिंद छिंद भिंद भिंद। सर्व कर्माष्टकं छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम् चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। सर्व जनानंदनं कुरु कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु कुरु। सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं कुरु कुरु। सर्व लोकानंदनं कुरु कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु कुरु। सर्व यजमानानंदनं कुरु कुरु। सर्व दुखं हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु ! ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहांणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

शांति मंत्र - ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नमः। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांतिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां। शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां। शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

सपूंजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घ्य - जल कुसुम सुगंधैः अक्षत दीपैः, विविध सुचरु फल धूप दह्यौ।
सुर खचर नरेन्द्रै, जजत शतेन्द्रै, विशद मोक्ष पद दातारै।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वन्दे, कर्माष्टकं निवारणम्।।

आचार्य श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

तुभ्यं नमः परम धर्म प्रभावकाय।
तुभ्यं नमः प्रबल बुद्धि विकाशकाय।।
तुभ्यं नमः परम शान्ति प्रदायकाय।
तुभ्यं नमः विशद सिन्धु गुणार्णवाय।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री विशदसागरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

(उपजाति छन्दः)

सदानंददानं गुणानां निधानं। विधानं सुधर्मासु सं मुक्तमानं।।
कृतानेकगीर्वाणसत्कीर्तिगानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।1।।
सुशांतं सुकांतं सदाचाररूपं। सुशीलं सुलीलं सदानम्रभूपं।।
सुबोधं विरोधातिगं दिव्यमानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।2।।
विरोषं विदोषं सदा मुक्तभोगं। वियोगं सुयोगं तरां त्यक्तरोगं।।
गुणैर्-मंडितं पंडितानंददानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।3।।
विमुक्तं सुमुक्तं समासक्तचित्तं। मुमुक्षुव्रजैर्वंदितं चिन्निमित्तं।।
सदा सेवितं देवदेवै-रमानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।5।।
विगर्वं विखर्वं सुसर्वप्रकाशं। विवर्णं विगंधं कृताघप्रणाशं।।
सदा सेवितं भव्यलोकैकमानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।6।।
विगात्रं सुपात्रं कुमिथ्यात्वदात्रं। लसत्पद्म नेत्रं पवित्रं विचित्रं।।
सुपूर्णेंदुवक्त्रं सु समक्षीरपानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।7।।
विलोभं विशोभं विदंभं विदारं। विमारं विकारातिगं त्यक्तहारं।।
हरं शंकरं बह्मरूपं हरीशं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।8।।
सुवीरं सुधीरं भवप्राप्तितीरं। गताशं विनाशं कुदुःखाग्निनीरं।।
सुमूर्तिं सुकीर्तिं जगप्राप्तमानं। जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।9।।

मंगल पाठ

मंगलं श्री जिनो देवो, ध्यानं कृत सु पञ्चमं।
अमंगलं सर्वदा हारीं, श्री जैनेन्द्र सुमंगलम्।।1।।
मंगलं जिन अर्हन्तं, मंगलं जिन सिद्धिदः।
मंगलं सुपूज्याचार्यां, मंगलं पाठकः गुरु।।2।।
मंगलं सर्व साधूभ्यः, मंगलं श्री जैनागमः।
मंगलं जिनबिंबः स्यात्, चैत्यालयः सुमंगलं।।3।।
अहिंसा परमोधर्माः, सर्व मंगल दायकः।
उत्तम क्षमादि धर्मः दश, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।4।।
असत कर्म नाशीं च, सर्व सौख्य प्रदायकः।
'विशद' रत्नत्रयी धर्मः, परम् मंगलदायकः।।5।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

पूजा पीठिका (संस्कृत)

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षिमामि)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि क्षिपामि)

शुद्धि मंत्र

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितोदुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथम मंगलम् मतः।।3।।
एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।
कर्माष्टक-विर्नमुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूत पन्नगाः।
विष निर्विषतां-याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पांजलिं क्षिमामि)

(छन्द)

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैः चरुभिर्दीपधूपकैः।
फलैर्घविधायाशु, श्री जिनेभ्यो ददेमुदा।।

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैः चरुभिर्दीपधूपकैः।
फलैर्घविधायाशु, परमेष्ठीभ्यो ददेमुदा।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैः चरुभिर्दीपधूपकैः।
फलैर्घविधायाशु, सहस नामेभ्यो ददेमुदा।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैः चरुभिर्दीपधूपकैः।
फलैर्घविधायाशु, श्री श्रुतेभ्यो ददेमुदा।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणितत्त्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायकमनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुंगवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित दृंगमयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय, स्वस्तिस्वभाव-परभावविभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धि मधिगम्ययथानुरूपं, भावस्यशुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्, भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नो, पुण्यं समग्र महमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञायाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्धमानः।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानम् पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करें)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धि बलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोष्टांग निमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जंघावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुरचारणाह्नः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाः कुशला माहिम्नि, लघिम्नि शक्ताः, कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।6।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धि मथाप्ति मप्ताः।
तथाप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।
आमर्षसंवौंष धयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोत्राघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवान महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोनः।।10।।

(इति परमऋर्षिस्वस्ति मंगल विधानम्) (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नवदेवता पूजन

स्थापना

अर्हत् सिद्धाचार्या-रुपाध्यायः तु साधवः।
चैत्य सौधागमं धर्मा, आह्वानम् नव देवता।।

ॐ ह्री श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालय नव देवताभ्यः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्री श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालय नव देवताभ्यः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।

ॐ ह्री श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालय नव देवताभ्यः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथाष्टक)

स्थाना सनार्थ प्रतिपत्ति योग्यान्, सद्भाव सन्मान जलादिभिश्च।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।1।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कर्पूर सुकुंकमाद्यैः, गन्धैः सुगंधीकृत दिग्विभागैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।2।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

साल्लक्षतै-रक्षत दीर्घ गात्रैः, सुनिर्मलैश्चन्द्रकरावदातैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।3।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्भोजनीलोत्पल पारिजातैः, कदंब कुंदादि तरु प्रसूनैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।4।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यकैः कांचन रत्न पात्रे, रत्नै रुपस्तैः हरिणा स्वहस्तैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।5।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपोत्करैः ध्वस्त तमो विघातैः, उद्योतिताशेष पदार्थ जातैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।6।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तरुष्क कृष्णागरु चंदनादि, सच्चूर्णजै-रुत्तम धूप वर्गैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।7।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लवंग नारिंग कपित्थ पूग, श्री मोच चोचादि फलैः पवित्रैः।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।8।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंदनाद्याक्षत तोय मिश्रै, विकाश पुष्पांजलिना सुभक्त्या।
जिनेन्द्र अर्चा समयेषु भक्त्या, जिनादिकान्नादरतो यजेहम्।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु, चैत्य चैत्यालयः जिनागम जिनधर्म नवदेवेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवों के अर्घ्य

ये घात जाति प्रति-घातजातं, शक्राद्यलंघ्यं जगदेकसारं।
प्रपेदरेऽनंत चतुष्टयं तान्, यजे जिनेन्द्रानिह कर्णिकायां।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

निःशेष बंध क्षय लब्ध शुद्ध, बुद्ध स्वभावान्निज सौख्यबुद्धयन्।
आराध्ये पूर्व दले प्रसिद्धान् स्वात्मोपलब्ध्यैः स्फुटमष्ट धेष्ट्या।।2।।

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

ये पंचधाचार भरं मुमुक्षुन्-नाचारयन्ति स्वयमाचरन्तः।
अभ्यर्चये दक्षिण दिग्दलेतान् आचार्य वयांत्स्वपदार्थचर्यान्।।3।।

ॐ ह्रीं आचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

एषा-मुपात्यं समुपेत्य शास्त्रा-राऽधीयते मुक्ति कृते विनेयः।
अपश्चिमान पश्चिम दिग्दलेस्मिन्-नुपाध्याय श्री गुरुन्महामि।।4।।

ॐ ह्रीं उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

ध्यानैक तानान बह्निः प्रचारान्, सर्वं सहान्निर्वृत्ति साधनार्थं।
संपूज्यया-भ्युत्तर दिग्दलेतान् साधून् नशेषान् गुण शील सिंधून।।5।।

ॐ ह्रीं साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

आराधकानभ्युदये समस्तान्, निःश्रेयसं वा धरति ध्रुवं यः।
तं धर्मआग्नेय विदिग्दलान्तः संपूजये केवलि नोपदिष्टम्।।6।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

सुनिश्चिता संभव बाधकत्वात्, प्रमाणभूतं स नयः प्रमाणं।
यजेद् हिनाष्टक विभेद वेद, मत्यादिकं नैऋत कोंण पत्रे।।7।।

ॐ ह्रीं जिनागमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

व्यपेत भूषायुधवेष दोषा-नुपेत निःसंगदयार्द्र मूर्तीन्।
जिनेन्द्रबिम्बान् भुवन त्रयस्थान, समर्च्चये वायु विदिग्दलेस्मिन्।।8।।

ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

सालत्रयानसद्मनि केतु मानस्, तं भालयान् मंगल मंगलादयान।
गृहाणजिनानामकृतान् कृतांश्च, भूतेश कोंणस्थ दले यजामि।।9।।

ॐ ह्रीं जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

मध्येकर्णिकमर्हदार्य-मनघं बाह्याष्ट पत्रोदरे।
सिद्धान् सूरिवराश्च पाठक गुरुन, साधुं च दिग्पत्रगान्।।
सद् धर्मागम चैत्य चैत्यनिलयान, कोंणस्थ दिग्पत्रगान्।
भक्त्या सर्व सुरासुरेन्द्र महितान्, तानष्टधेष्ट्या यजे।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु सद्धर्मागम् चैत्य चैत्यालयेभ्यो महार्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाल

(शर्दुल विक्रीडित छन्द)

सद्बुद्धिं विशदं श्रुताद्यसहितं ज्ञानाब्धि पारङ्गतं।
सेव्यं धीमत्पर्ययैर्गुणशतैः सर्वज्ञसत्केवलम्।।

लोकालोक-विलोक भास्करविभं धर्मामृताम्भोनिधिं
साम्राज्याखिलशर्म विश्वकमलं सम्पूजयामोमुदा।।1।।

(अनुष्टुप छन्द)

नय-प्रमाण-कर्तारं, घाति-वेद-प्रघातकं।
केवल-ज्ञान-सत्सूर्यं, लोकालोकावलोकनं।।
अनन्त-सौख्य-गृहं वन्दे, वन्दे देवाधिपं जिनं।
लक्ष्मी-द्वय-भोक्तारं, वन्दे विद्येश्वरं यमं।।2।।
सिद्धं सम्पूर्ण-सौख्याढ्यं, जन्म-मृत्यु-जरातिगं।
सुधराष्टमी-भूपं वा, जिननाथं भवांतकं।।
कालानन्त-क्षयातीतं, रोग-शोक-निवारकं।
सिद्धं सिद्धि-करं चाये, सर्व-सिद्धि-प्रदायकं।।3।।
स्वाचार्य प्रगणाधीशं, विश्वज्ञान-विपारगं।
महा-चारित्र-वाराशिं, शिष्य-लोक-विशारदं।।
महा-रत्नत्रयागारं, धर्माधारं मदापहं।
सर्व-जीवोपदेष्टारं, गणनाथ-नमाम्यहं।।4।।
उपाध्यायं महाधीरं, महाज्ञानोपदेशकं।
अंग-पूर्व-खनिं वन्दे, शिष्य-वर्ग-प्रपाठकं।।
ज्ञानाभ्यासं परं नित्यं, पंच-वृत्त-विदांवरं।
यथाख्यातं गृहं शुद्धं, वन्दे सद्धर्म-दीपके।।5।।
स्वात्म-ध्यान-सदालीनं, मोन्यधारं दयानिधिं।
त्रैलोक्येशं गणाधीशं, श्वेत-कल्लोल-भावगं।।
समता-भावना-गारं, पंचाचारमहागृहं।
विश्व-बोधं परं शान्तं, वन्दे साधुं-प्रमाकरं।।6।।

धर्मः सर्व-सुखाकरो हित-करो, धर्म बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिव-सुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्-नास्त्यपरः सुहृद्-भव-भृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्त-महं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय।।7।।

कोटि-शतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीति-स्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाश-दष्टौ च सहस्र-संख्या-मेतच्छ्रुतं पंच पदं नमामि।।
अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुद-णाण-महोवहिं सिरसा।।8।।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान्।
वंदे भावनव्यंतरद्युतिवारन् स्वर्गामरावासगान्।।
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः।
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये।।9।।
अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं।
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः।।
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं।
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुतमह-मखिलं सर्वलोकैकसारम्।।10।।

जिनान् सिद्धान् तथा सूरीन् पाठक साधुसत्तमान्।
जिनधर्म जिनागम् च चैत्य, चैत्यालय सम्पूजके।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायायसर्वसाधु सद्धर्मागम चैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स जयतु जिनधर्मो यावदाचन्द्रतारम्, व्रत नियम तपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः।
अहरहरभिवृद्धिं यान्तु चैत्यालयास्ते, तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना

संसाध्याखिल कल्याण, मालोद्रेकोदयः श्रियम्
कलिकुंडमखण्डात्मा-ऽभीष्टमारोपयाम्यहं

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दण्ड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रमः अत्रावतरावतर अत्र तिष्ठति-तिष्ठति अत्र मम सन्निहितो भव-भव संवोषट् हूं फट् स्वाहा।

यंचत् कांचन रत्न रश्मि रुचिर, भृंगारनालोच्छलत्
कर्पूरोलवणगंधद्यावदलिभिः सतीर्थ वार्भिर्वरं,
तेजस्तत्त्व-रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री खंडद्रव कुंकुमामलमिलत्कर्पूर पूरादिभिः।
सद्गांधैर्मधु भृन्मुखोच्छ-मधुरा रावैर्मनोहारिभिः।।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे गंध निर्वपामीति स्वाहा।

प्राद्यच्छाखच्चारुचंद्र किरण, श्री स्पर्द्धि गंधाक्षतैः
शालीयैरमलै विशाल कमलैः, क्रोडीकृतैरक्षतै।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पैःपंचक पारिजात कनकांभोजैस्मिलन्याद्यवैः।
मंदारामल मल्लिकाप्रविकसत्पुन्नाग पुष्पैरपि।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्फूर्जत्स्फार सुधा विशुद्ध मधुरान्नाज्येतु निर्यासजैर्।
नैवेद्यैः सुसुवर्णपात्र भरणाभ्यासैगुणज्ञोपमैः।।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे चरू निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वांत ध्वंस समुद्धतोद्धत शिखा, व्याप्तां तरालैरलं
दीपैर्न्नव्य दिवाकर भ्रमकरैर्माणिक्यमाभासुरै।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरां गुरुदेवदारु दहनोद्य-द्दिव्य धूपैर्मिलद्।
भृंगांरावशी कृतामरवर स्त्रेणैर्मनोहारिभिः।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खर्जूरावर मातुलिंग कदली सन्नाक्ति नि किरोद्रवैः
स्निग्ध स्वादु रसातिरेक विलसत्प्राकैः फलै निस्तुलैः।
तेजस्तत्त्व रमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व-मसमं यामिष्ट सं सिद्धये।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याराध्यां सुगंधाक्षत कुसुम नैवेद्योल्लसद्दीप धूप
प्रेषत् सन्नालिकेरामल फल निकरो-घैर्रन घैंनार्घ्यं।।
पादौ दिव्यां सुगंधाक्षत कुसुमयुतं प्रोक्षिपाम्यंजलिं च।
श्री पार्श्वस्याखंड कीर्तेर्ह्यविकल कलिकुंडाकृतेरिस्ट पुष्टैः।।9।।

।। इत्यष्ट विद्यार्चन संकल्प।।

अथ अष्टौ पिण्डाधिस्टानृणां क्रमशः प्रत्येकाह्वानादि कार्यविधानभमिधीयते।

कल्याण मंदिर स्तोत्र पूजन

पूर्व पीठिका (स्रग्धरा छन्द)

श्री मद्गीर्वाणसेव्यं प्रबलतर महा-मोहमल्लातिमल्लं।
कान्तं कल्याणनाथं, कठिनशठमनो-जातमत्तेभसिंहम्।।
नत्त्वा श्री पार्श्वदेवं, कुमुदविधुकृतो, रम्यकल्याणधाम्नः।
स्तोत्रस्योच्चैर्विशालं, विधिवदनुपमं, पूजनं कथ्यतेऽत्र।।1।।
पंचवर्णेन चूर्णेन, कर्त्तव्यं कमलं वरं।
वेदवार्धिकरं वेद्यां, कर्णिकामध्यगं बुधैः।।
धौतवस्त्रधरः प्राज्ञः, श्लैष्मादिव्याधिवर्जितः।
बह्याभ्यन्तर-संशुद्धो, जिनपूजा-विधानवित्।।2।।
गुरोराज्ञां विधायोऽच्चैः, शिरस्या-दरतस्ततः।
पृष्ट्वा सङ्घपतिंपूजा-प्रारम्भः त्रियतेऽञ्जसा।।
आदौ गन्धकुटीपूजां, विधायामल-वस्तुभिः।
पात्रानामर्हदादीनां, ततोऽर्चां परमेष्ठिनाम्।।3।।
ततो गत्त्वा गुरो-रग्रे, भारती-मुनि-पूजनं।
कृत्त्वेलाशुद्धिकार्यं च, क्रमेणागमकोविदैः।।
तताऽम्लानां च सामग्रीं, कृत्त्वासद्गीः बुधोत्तमः।
पूजनं पार्श्वनाथस्य, कुर्यान्मन्त्र-पुरस्सरम्।।4।।

(एतत्पद्यसप्तकं पठित्वा स्वस्तिकस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।)

स्थापना

प्राणतस्वः समापातं, फणिलाञ्छन-संयुतम्।
वामा मातृसुतं पार्श्वं, यजेऽहं तद्गुणाप्तये।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदये अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदये सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टकम्) (शिखारिणी छन्द)

वियद्गङ्गासिन्धुः प्रमुख शुचितीर्थाम्बुनिवहैः,
शरच्चन्द्राभासैः कनकमय-भृङ्गार-निहितैः।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनर खगाधीश-महितं।
चिदानन्दप्राज्ञं कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्फुरद्गन्धाहृत-प्रचुर-फणिसंरुद्ध-तरुजैः।
रसैः कर्पूरास्यै-र्निविडभवसन्तापहरणैः।। यजेऽहं ।।2।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्डैः शालीयै-रपगत-तुषै-रक्षत-मयैः।
प्रपुञ्जैरानन्द-प्रणयजनकै नेत्रिमनसाम्।। यजेऽहं ।।3।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मरुद्दारुद्भूतै-र्विकचसरसी-जातबकुलैः।
लवङ्गैरामोद-भ्रमरमिलितैः पुष्पनिचयैः।। यजेऽहं ।।4।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदत्रैरापूर्ण-प्रवरघृतपक्वान्न सहितैः।
रसाढ्यै नैवेद्यै-रतुलकाञ्चनपात्रविधृतैः।। यजेऽहं ।।5।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हविर्जातैः रम्यै-र्विदलित दिशाकीर्णतमसैः।
प्रदीप्तै-र्माणिक्यै-र्विशदकलधौतर्चि-रमलैः।। यजेऽहं ।।6।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकर्पूरोत्पन्नै-रमर-तरु-सच्चन्दन-भवैः।
सुधूपौघः श्लाघ्यै-र्मिलदलिगणागुञ्जितरवैः।। यजेऽहं ।।7।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपक्वैः नारङ्ग-क्रमुकशुचिकूष्माण्डकरकैः।
फलै-र्मोचाम्राद्यै विबुधशिवसम्पद्वितरणैः।। यजेऽहं ।।8।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलै गन्धद्रव्यै 'विशद' सदकैः पुष्पचरुकैः।
सुदीपैः सद्धूपैर् बहुफलयुतैरर्घ्य निकरैः।। 9।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यजेऽहं यस्वार्थं क्रियते पूजा, तस्य शातिर्भवेत्सदा।
शान्तिके पुष्टिके चैव, सर्व कार्येषु सिद्धिदा।।

शान्तये शांतिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

शताब्दजीवी समशत्रुमित्रो, हरित्प्रभाङ्गों हतमारदर्पः।
सपादचापद्वयतुङ्गकायो, यस्तं सदा पार्श्वजिनं नमामि।।

(इन्द्रवज्रा छन्द)

निराभूषशोभं, परिध्वस्तलोभं, चिदानन्दरूपं नतानेकभूपं।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
शिवं सिद्धकार्यं वरानन्ततुर्यं, रमानाथमीशं, जितानाङ्गपाशम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
शतेन्द्रार्च्यपादं स्फुरद्दिव्यनादं, गणाधीशमाद्यं, लसद्देववाद्यम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
हरं विश्वनेत्रं, त्रिशुभ्रातपत्रं, क्षुधाबह्निनीरं, द्विधासङ्गदूरम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
दिशाचेलवन्तं वरं मुक्तिकान्तं, निरस्तारिमोहं, पुरं सौख्यगेहम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
जराजन्ममुक्तं, वरानन्दयुक्तं, हतक्रोधमानं, कृतज्ञानदानम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
अवद्यापहारं, सुविद्या गभीरं, स्वयंदीप्तिमूर्ति, जगत्प्राप्तकीर्तिम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
यतिवरवृषचन्द्रं, चित्कलापूर्णचन्द्रं, विमलगुण समृद्धं, नम्रनागामरेन्द्रम्।।
जिनपतिमहिधारं दुःखसन्तापहारं, भजति नमति सारं, सौख्यसारं लभेत।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथ जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

सर्वजीवदयायुक्तः सर्वलौकान्तिकार्चितः।
पार्श्वदेवः श्रियं दद्यात् नित्यं पूजाविधायिनाम्।।

इत्याशीर्वादः

कल्याण मंदिर स्तोत्र अर्घ्यावली

कल्याणकर्त्ता शिवसौख्यभोक्तां, मुक्ते सुदातापरमार्थ युक्ता।
यो वीतराग गतरोष दोषः, तं पार्श्वनाथं निकटं करोमि।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इच्छित कार्यसाधक

कल्याणमन्दिर- मुदार- मवद्य-भेदि,
भीता-भय- प्रदम- निन्दित-मङ्घ्रि पद्मम्।
संसार सागर निमज्ज- दशेष जन्तु,
पोतायमान- मभिनम्य- जिनेश्वरस्य।।1।।

ॐ ह्रीं भव समुद्र पतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्पदोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ ह्रीं भगवते अभीसिप्त कार्य सिद्धिं कुरूं कुरूं स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठकज्ज सिद्धि पराणं जिणाणं।

अभीप्सित सिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरु, गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्-न-विभु-र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय धूमकेतोस्,
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ श्री नमो भगवते अभीप्सित कार्यसिद्धिं कुरू कुरू स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वकराणं ओहि जिणाणं।

जल भय निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मंत्र - ॐ भगवत्यै पद्म द्रह निवासिन्यै नमः स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्दभय सामण बुद्धीणं परमोहि जिणाणं।

असमय निधन निवारक

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत्।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः।।4।।

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवती ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अकाल मिच्चुवारयाणं सव्वोहि जिणाणं।

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज-बाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नत गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ पद्मिने नमः स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधण वुड्डिकराणं अणंतोहि जिणाणं।

सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाश:।
जाता तदेव - मसमीक्षित - कारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवते श्रीं ब्रां, ब्रीं, क्षां क्षा: प्रौ: हौ: नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्त इत्थि कराणं कोट्ठ बुद्धीणं।

अभीसिप्त जनाकर्षक

आस्ता-मचिन्त्य-महिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो-भवतो जगन्ति।
तीव्रातपो-पहत-पान्थ-जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरस: सरसोऽनिलोऽपि।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय, क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवते शुभाशुभं कथयित्रे स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभीट्ठ साधयाणं बीजबुद्धीणं।

कुपितोपदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिली भवन्ति,
जन्तो: क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धा:।
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य-भाग,
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवते मम् सर्वांग पीड़ा शान्ति कुरू कुरू स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हगदहारीणं पादाणुसारीणं।

पूर्णार्घ्यं

वारि-गंधाक्षतं पुष्पं, चरु दीप धूपं फलं।
निज शुद्धिविशदं करणैः, रर्चामाः पूर्ण द्रव्यकैः।।

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व वृश्चिक विष विनाशक

मुच्यन्त एव मनुजा: सहसा जिनेन्द्र!,
रौद्रै - रुपद्रव - शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित - तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरै-रिवाशु पशव: प्रपलायमानै:।।9।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्ग विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो अर्हते मम रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो विसहर विस विणासयाणं संभिण्णसोदारणं।

तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्त:।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जल-मेष नून-
मन्तर्गतस्यमरुत: स किलानुभाव:।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ श्रीं क्लीं त्रिभुवन रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खर भयपणासयाणं उजुमदीणं।

जल-अग्निभय विनाशक

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावा:,
सोऽपि त्वया-रति-पति: क्षपित: क्षणेन।

विध्यापिता हुतभुज: पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन।।11।।

ॐ ह्रीं अनङ्गमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवत्यै चाण्डिकायै स्वामिने नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारियालयण बुद्धीणं विउल मदीणं।

अग्निभय विनाशक

स्वामिन्नल्प - गरिमाण-मपि प्रपन्नास्-
त्वां जन्तव: कथमहो हृदये दधाना:।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभाव:।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ सरस्वत्यै गुणवत्यै नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणलभय वज्जयाणं दस पुव्वीणं।

जल मिष्ठता कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौरा:।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

ॐ ह्रीं जित क्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवत्यै स्वामिने नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिक्खभय वज्जयाणं चोद्दस पुव्वीणं।

शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।

पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकाया:।।14।।

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ णमो कालरात्रि दोषहराय नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो भंसण भय झवणाणं अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं।

चोरी गत द्रव्यदायक

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविन: क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म - दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल - भाव-मपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदा:।।15।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो गंधारि स्वामिने नम: श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं हूँ स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खर धणप्पयाण विउव्वग पत्ताणं।

गहन वन-पर्वतभय विनाशक

अन्त: सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यै: कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य - विवर्तिनो हि,
यदि्वग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावा:।।16।।

ॐ ह्रीं देह देहि कलह निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ णमो गोर्यायै इन्द्रायै वज्रायै स्वामिने नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहण वण भय णासयाणं विज्जाहराणं।

युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभि-रयं त्वदभेद-बुद्धया,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभाव:।

पानीयमप्-यमृत-मित्यनु-चिन्त्यमानम्,
किं नाम नो विष-विकारमपा-करोति।।17।।

ॐ ह्रीं संसार विष सुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र- ॐ य: य: स: ह: ह: ब: उरुरिपलय ह्रूँ रूहान्तैं ह्रीं पार्श्वनाथाय द्रव दह दुष्ट नाग विष क्षिप स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ बुद्धिणासयाणं चारणाणं।

सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत - तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्ना:।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व जन वन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो सुमतिदेव्यै: विष निर्णासिन्यै नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो फणि सत्ति सोसयाणं पण्ण समणाणं।

नेत्र रोग विनाशक

धर्मोपदेश - समये सविधानुभावा-,
दास्तां-जनो भवति ते तरुरप्यशोक:।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोध-मुपयाति न जीव लोक:।।19।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ णमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगद णासयाणं आगासगामीणं।

उच्चाटन मोचक

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख - वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्य विरला सुर-पुष्प-वृष्टि:।

त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नून-मध एव हि बन्धनानि।।20।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ भगवत्यै: ब्रम्हाण्यै स्वामिने नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिल गहणासयाणं आसीविसाणं।

शुष्क वनोपवन विनाशक

स्थाने गम्भीर - हृदयोदधि - सम्भवाया:,
पीयूषतां तव गिर: समुदीरयन्ति।
पीत्वा यत: परम-सम्मद-संग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्य-जरा-मरत्वम्।।21।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ भगवत्यै पुण्य पल्लव कारिण्यै: नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फिय तरु वत्तयराणं दिट्ठिविसाणं।

मधुर फल प्रदायक

स्वामिन्-सुदूर - मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्येवदन्ति शुचय: सुर - चामरौघा:।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि - पुंगवाय,
ते नून-मूर्ध्व-गतय: खलु शुद्ध-भावा:।।22।।

ॐ ह्रीं सुर चामर विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ णमो पद्मावत्यै मल्व्यूं नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरुपत्तणासयाणं उग्गतवाणं।

राज्य सम्मान दायक

श्यामं गम्भीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न,
सिंहासनस्थ-मिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्।

आलोकयन्ति – रभसेन नदन्तमुच्चैश्,
चामीकराद्रि–शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ नमो श्रीं क्लीं झां झीं झूं झ: नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो बज्झय हरणाणं दित्ततवाणं।

शत्रु विजय राज्य प्रदायक

उद्गच्छता तव शिति–द्युति–मण्डलेन,
लुप्त–च्छदच्छवि – रशोक – तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ भ्रां भ्रीं षोड्स जाये पदमे प्रों ह्रूँ ह्रौं नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो रज्जदावयाणं तत्तातवाणं।

पूर्णार्घ्यं

वीतराग जिनेन्द्राणां, पार्श्वनाथ निरन्जनं।
जिनपादाम्बुजं विशदं, रचर्मिः पूर्णद्रव्यकैः।।

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय षोडशदलकमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असाध्य रोग शामक

भो:–भो: प्रमाद–मवधूय भजध्वमेन,
मागत्य निर्वृति–पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्–नभिनभ: सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ नमो धर्णेन्द्र पद्मावत्यै स्वामिने नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडल मलणाणं महातवाणं।

वचन सिद्धि प्रतिष्ठायक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषुनाथ,
तारान्वितो विधु–रयं विहताधिकार:।
मुक्ता – कलाप – कलितोरु – सितातपत्र,
व्याजात्त्रिधा धृत–तनुर्ध्रुव–मभ्युपेत:।।26।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सहिता क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्र: पद्मार्थे नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो जय पदाईणं घोरतवाणं।

वैर विरोध विनाशक

स्वेनप्रपूरित – जगत्त्रय – पिण्डितेन,
कान्ति–प्रताप–यशसा–मिव संचयेन।
माणिक्य – हेम – रजत – प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन् नभितो विभासि।।27।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती स्वामिने बल पराक्रमाय नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो खलदुट्ठणासयाणं घोर परक्कमाणं।

यश: कीर्ति प्रसारक

दिव्य–स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना–
मुत्सृज्य रत्न–रचितानपि मौलि–बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वाऽपरत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

ॐ ह्रीं भक्त जनान वनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ श्रीं क्रों वषट् स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवद्दव वज्जणाण घोर गुणाणं।

आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म-जलधेर्विपराङ् मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्म-विपाक-शून्य:।।29।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभय, तारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ क्रौं ह्रूं फट् स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाणं घोरगुण बंभयारीणं।

असंभव कार्यसाधक

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतु:।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूतर्ये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ श्रीं क्लूँ ब्लूँ ह्रूं नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अपुव्वबल पदाईणं आमोसहि पत्ताणं।

शुभाशुभ प्रश्न दर्शक

प्राग्भार-संभृत-नभांसि-रजांसि रोषा,
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रव जिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवती चक्रधारिणी भ्रामय भ्रामय मम् शुभाशुभं दर्शय दर्शय स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठ विण्णत्तिदावयाणं खेल्लोसहि पत्ताणं।

दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम,
भ्रश्यत्-तडिन् मुसल-मांसल-घोर-धारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर - वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम् ।।32।।

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवते मम शत्रून, बंधय-बंधय, ताड्य-ताड्य, उन्मूलय-उन्मूलय, छिन्द-छिन्द, भिन्द-भिन्द स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमदणासयाणं जल्लोसहि पत्ताणं।

उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड,
प्रालम्ब भृद्-भय-दवक्त्र-विनिर्यदग्नि:।
प्रेतव्रज: प्रति भवन्तमपीरितो य:,
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दु:ख-हेतु:।।33।।

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रवजिन शीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ श्री वृषभादि तीर्थंकरेभ्यो नम: स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो असणि पातादि वारयाणं सव्वोसहि पत्ताणं।

भूत पिशाच पीड़ा तथा शत्रु भयनाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य,
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्या:।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशा:,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाज:।।34।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ नमो भगवते भूत पिशाच राक्षस बेतालन् ताड्य-ताड्य मारय-मारय स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो भूतवाहावहारयाण विट्ठोसहि पत्ताणं।

मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!,
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मंत्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।

ॐ ह्रीं पवित्र नामघयेसाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र–ॐ नमो भगवति मिर्गीयागदे अपस्मारे मृत्युन्मदाय स्मरादि रोग शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिगीरोअ वारयाणं मण बलीणं।

सर्व वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव-पाद-युगं न देव!,
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतन-महं मथिताशयानाम्।।36।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ अष्ट महानागाकुल विष शान्ति कारण्यै नमः स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो बाल वसीयरण कुसलाणं वयण वलीणं।

सकल कष्ट निवारक

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते।।37।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ नमो भगवते सर्वराजा प्रजा वश्य कारणे नमः स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वराजपयावसीय कुसलाणं कायबलीणं।

असह्य कष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।38।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनबान्धताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ जानवान्हार वापहारव्यै भगवत्यै खंगारीदिव्यैः स्वामिने नमः स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुस्सह कट्ठ णिवारयाणं खीर सवीणं।

सर्व ज्वर शामक

त्वं नाथ! दुःखि जन-वत्सल हे शरण्य!,
कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।

ॐ ह्रीं भक्तजन वत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ नमो भगवते (अमुकस्य) सर्व ज्वर शांति कुरू-कुरू स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वजर संति करणाणं सप्पि सवीणं।

विषम ज्वर विघातक

निःसंख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य!,
मासाद्य सादित-रिपु-प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मिचेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पद कमल युगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र – ॐ नमो भगवते व्यन्तर ह्यूँ नम: स्वाहा।
ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हसीयबाहा विणासयाणं महुर सवीणं।

अस्त्र शस्त्र विघातक

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तुसार!,
संसार - तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
त्रायस्व देव! करुणा-हृद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बुराशे:।।41।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थ वेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र – ॐ नमो भगवते बंभयारिजैं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नम: स्वाहा।
ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पलाहकारयाणं अमइसवीणं।

स्त्री सम्बन्धी समस्त रोग शामक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्ते: फलं किमपि सन्तत-सञ्चिताया:।
तन्मेत्वदेक - शरणस्य शरण्य! भूया:,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्य बहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मंत्र – ॐ नमो भगवत स्त्रीप्रसूत रोगादिशान्तिं कुरू-कुरू स्वाहा।
ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थि रत्तरोअ णायसयाणं अक्खीण महाणसयाणं।

सर्वबन्धन मोचक

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!,
सान्द्रोल्लसत्पुलक-कञ्चुकितांग-भागा:।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्या:।।43।।

ॐ ह्रीं जन्म मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंत्र – ॐ नमोसिद्ध: महासिद्ध जगतसिद्ध त्रैलोक्यसिद्ध कारागार रहित बन्धन मम् रोगं छिन्द-छिन्द स्तम्भय-स्तम्भय, जृम्भय-जृम्भय, मनोवांछित सिद्धिं कुरू-कुरू स्वाहा।
ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदि मोअगाणं सव्वसिद्धायदणाणं।

वैभव वर्धक

जन नयन कुमुदचन्द्र-प्रभास्वरा: स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल निचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

मंत्र – ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षार कालसर्प दोष शाांतिकारक कल्याणाकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।
ऋद्धि मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खय सुहदायगस्य वड्ढमाण बुद्धि रिसिस्य।

पूर्णार्घ्यं

पार्श्वनाथ जिनेन्द्राणां, केवलज्ञानधारका:।
निज बुद्धि विशदं करणै:, रर्चाम: पूर्ण द्रव्यकै:।।

ॐ ह्रीं विंशति दल कमलाधिपतये श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप : ॐ नमोऽर्हते भगवते सकल विघ्नहर ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा श्री कल्याणकारी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वोपद्रव शांतिं, लक्ष्मी लाभं कुरु कुरु नम: स्वाहा ।

जयमाल

पार्श्वनाथो जिनः श्री मान, नामात्यर्थं समुद्वहम्।
देयत्मे वुद्धि मुद्धूत, घातिकर्म विनिर्मितः।।

(मलनी छन्द)

अजर-ममर-सारं मार-दुर्वार-वारं, गलित-बहुलखेदं सर्वतत्त्वानुवेदम्।
कमठ-मदविदारं भूरिसिद्धान्तसारं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।1।।
प्रहतमदनचापं केवलज्ञानरूपं, मरकतमणिदेहं सौम्यभावानुगेहम्।
सुचरितगुणपूरं पञ्चसंसारदूरं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।2।।

सकल-सुजनभूपं धौत निःशेषतापं, भवगहनकुठारं सर्वदुःखापहारम्।
अतुलित-तनुकाशं घात्यघातिप्रणाशं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।3।।
असदृशमहिमानं पूजयमानं नमानं, त्रिभुवनजनतेशं क्लेशवल्लीहुताशम्।
धृतसुमनसमीशं सुद्धबोधप्रकाशं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।4।।
गतमदकरमोहं दिव्यनिर्घोषवाहं, विगततिमिरजालं मोहमल्लप्रमल्लम्।
विलसद-मल-कायं मुक्तिसामस्त्यगेहं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।5।।
सुभगवृषभराजं योगिनां ध्यानपुञ्जं, त्रुटितजननबन्धं साधुलोकप्रबोधम्।
सपदि गलितमोहं भ्रान्तमेधाविपक्षं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।6।।
अनुपम-मुखमूर्ति प्रातिहार्याष्टपूर्ति, खचरनरसुतोषं पञ्चकल्याणकोषम्।
धृतफणिमणिदीपं सर्वजीवानुकम्पं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।7।।
अमरगुणनृपालं किन्नरीनादशालं,फणिपतिकृतसेवं देवराजाधिदेवम्।
असम-बल-निवासं मुक्तिकान्ता-विलासं, विगतवृजिनयूथं नौम्यहं पार्श्वनाथम्।।8।।
मदन-मदहरश्री-वीरसेनस्य शिष्यैः, सुभग-वचन-पूरैः राजसेनैः प्रणीतम्।
जपति पठति नित्यं पार्श्वनाथाष्टकं यः, स भवति शिवभूपो मुक्तिसीमन्तिनीशः।।9।।
स्मरेण भक्त्या जपेन यस्य, ध्यायेन गीतेनसमर्चया वा।
प्राप्नोति सिद्धिश्च मनोनुकूला, पापादपापात्-स च पार्श्वनाथाः।।10।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नान विघ्न हरं प्रताप जनकं, संसार तापं हरं।
संस्तुत्यं श्रीढं करोमि 'विशदं' भव सिन्धु पार प्रदं।।
पूर्णार्घेण सुपूजयामि जिनपं, श्री पार्श्वनाथं पदं।
मुक्ति श्री स्वभिलाषया जिन विभो! देहि प्रभो! वाच्छितं।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पूर्णार्घ्य

त्रैकाल्यं सु तित्थयरे, निर्वाण उसह सागरादौ च।
सव्वेसिं मुणि गणहरे, सिद्धे सिरसः णमंस्सामि।।1।।
मोह ध्वांत विदारणं सुविशदं, विश्वोद् दीप्तिश्रियम।
सन्मार्ग प्रतिभाषकं विबुध, संदोहामृतापादकम्।।
श्री पादं जिन शांति चंद शरणं, सद्भक्ति मानेमि ते।
भूयस्तापहरस्य देव! भवतो, तव पाद प्रणमाम्यहं।।2।।
इत्थंयस्तु समस्तशस्तदिविजस्, तोमस्य तत् संव्रतस्।
त्रैलोक्यार्पितपाद पद्मयुगल, श्रीमज्जिनानामपि।।
भक्त्याराधन मातनोतिविधिना द्रव्यादिशुध्यान्वितः।
सोयं धर्मरथस्यनेमिरर्हन्, मत्त्वैति सिद्धिश्रियम्।।3।।
प्रमादज्ञान दर्पाद्वैर - विहितं-विहितं न यत्।
जिनेन्द्रास्तु प्रसादत्ते सकलं - सकलं च तत्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्मो नमः। दर्शन-विशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन- सम्यगज्ञान-सम्मक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्मो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्मो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपौरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर, नारनौल आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

शान्तिपाठः (संस्कृत)

(चौपाई)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शील-गुण-व्रत-संयम-पात्रम्।
अष्टशतार्चित-लक्षण-गात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुनेत्रम्।।1।।
पंचमभीप्सित-चक्र धराणां पूजितमिन्द्र-नरेन्द्र-गणैश्च।
शान्तिकरं गण-शान्तिमभीप्सुः, षोडश-तीर्थंकर प्रणमामि।।2।।
दिव्य-तरुः सुर-पुष्प-सुवृष्टिर्दुन्दुभिरासन-योजन-घोषौ।
आतपवारण-चामर-युग्मे, यस्य विभाति च मण्डलतेजः।।3।।
तं जगदर्चित-शान्ति-जिनेन्द्रं, शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं, मह्यमरं पठते परमां च।।4।।

(वसन्त तिलका)

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत-पाद-पद्माः।
ते मे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपा-
स्तीर्थंकराः सतत-शान्तिकरा भवन्तु।।5।।

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः।।6।।

(शर्दूलविक्रीडित)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौर-मारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं, सर्व-सौख्य-प्रदायी।।7।।

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्त-धाति-कर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृष्भाद्या जिनेश्वराः।।8।।

(प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः)

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपति-नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्थापि प्रिय-हित-वचो भावना चात्मतत्त्वे,
संपद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः।।9।।

(आर्या)

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तपपदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद्यावन्निर्वाण-संप्राप्तिः।।10।।

(गाथा)

अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ता-हीणं च जं मए भणियं।
तं खमउ णाणदेव य, मज्झ वि दुक्ख-क्खयं दिंतु।।11।।
दुक्ख-खओ कम्प-खओ, समाहिमरणं च बोहि-लाहो य।
मम होउ जगद-बान्धव च तव जिणवर चरण सरणेण।।12।।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

क्षमापना

(अनुष्टुप)

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु तत्प्रसादाज्जिनेश्वर।।1।।
आह्वाननं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।2।।
मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं द्रव्य-हीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष-रक्ष जिनेश्वर।।3।।
मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।4।।
सर्व-मंगल-मांगल्यं सर्वकल्याणकारकं।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम्।।5।।

श्लोक : संसार सागरोत्तीर्णं, मोक्ष सौख्य पदप्रदम।
नमामि सर्व अरहन्तं, त्रैकालेन जिनेश्वरम्।।

।। नौ बार णमोकारमंत्र का जाप।।

अथ विसर्जनम्

प्रक्षीणदोषमलमिद्धमणिप्रकाशं। लोकैकभूषणमहो जिनदिव्यरत्नम्।।
मुक्तिश्रियः मपदि संवदनं विधातुं। पूज्यं प्रपूज्यहृदये निदधे भवतंम्।।
।। कायोत्सर्गं करोमि।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् सर्व रक्षाधिपतये मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सद्बुद्धिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु।
आरोग्यमस्तु वियोस्तु महोस्तु पुत्र पौत्रोद्भवोस्तु सर्वसिद्धियति प्रासादात।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

तर्ज : हम सब उतारे तेरी आरती...

आज करें हम विशद भाव से, आरति मंगलकारी-2।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड कहाते-2, जग जन के दुखहारी।। हो जिनवर।।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धान्य बनाए।। हो जिनवर....।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए।। हो जिनवर..।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए।। हो जिनवर....।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।। हो जिनवर..।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण-भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए।। हो जिनवर..।।5।।

कल्याण मन्दिर विधान (हिन्दी)

इच्छित कार्यसाधक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
मंदिर हैं कल्याणों के, नाशक कर्म कृपाणों के।
भांति-भांति के सुख दाता, सर्व चराचर के ज्ञाता।।
सुर-असुरों से पूज्य चरण, अभय प्रदाता हुए परम।
पापों के भेदन कर्त्ता, भवि जीवों के भव हर्त्ता।।
भव सागर में नाव समान, नाविक हो तुम श्रेष्ठ महान्।
जिनवर पार्श्वनाथ भगवान, आप करो मेरा कल्याण।।
पावन हैं तव चरण कमल, निर्विकार तव पूर्ण अमल।
मेरे हों सब कर्म शमन, तव चरणों में करूँ नमन्।।१।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

अभीप्सित सिद्धिदायक

पार्श्वनाथ दुखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
जो गरिमा के हैं सागर, रत्नों में शुभ रत्नाकर।
जिनकी स्तुति गाने को, महिमा शुभ बतलाने को।।
विस्तृत बुद्धि वाला भी, बृहस्पति हो मतवाला भी।
न समर्थ हो पाता है, वह भी तो थक जाता है।।
जीव कमठ का आया था, संवर देव कहाया था।
उसका मान गलाने को, धर्म का मार्ग चलाने को।।
बने धूमकेतु स्वामी, पार्श्वनाथ अन्तर्यामी।
निश्चय से गुणगान यहाँ, विशद भाव से करूँ महाँ।।२।।

हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

जल भय निवारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
तव स्वरूप का हे स्वामी!, बनकर के भी अनुगामी।
मैं साधारण सा प्राणी, मेरे जैसा अज्ञानी।।
तव स्वरूप को कौन कहे, किसमें वह सामर्थ रहे।
जहाँ कहीं भी जाएगा, वह उपहास कराएगा।।
क्या दिन में अन्धा प्राणी, कोई हो कैसा ज्ञानी।
निश्चय से रवि का वर्णन, कर पाएगा क्या क्षण-क्षण।।
उल्लू का बच्चा कोई, ढीठ हुआ होवे सोई।
क्या वर्णन कर पाएगा, निश्चय धोखा खाएगा।।३।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

असमय निधन निवारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
प्रलय काल के आने पर, सब पानी बह जाने पर।
रत्न साफ दिख जाते हों, सभी पकड़ में आते हों।।
नाथ! ज्ञान भी पाने से, मोह का क्षय हो जाने से।
तव गुण का अनुभव करके, मानव यह निश्चिय करके।।
जो गुण प्रभु तुम प्रगटाए, क्या कोई वह गिन पाए।
किसमें है सामर्थ्य अरे!, कितने भी भव प्राप्त करे।।
गुण अनन्त तुमने पाये, वह गिनती में न आये।
उनके तुम अधिकारी हो, फिर भी प्रभु अविकारी हो।।४।।

हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
नाथ आपके गुण गाने, सारे जग को बतलाने।
जड़ बुद्धि मैं अज्ञानी, मैं हूँ दोषों की खानी।।
तुम तो उत्तम गुणधारी, संख्यातीत रहे भारी।
उद्यत हूँ मैं कहने को, सभी परीषह सहने को।।
बालक क्या निज बुद्धि से, मन को पूर्ण विशुद्धि से।
युगल भुजाएँ फैलाकर, होवे कोइ बड़ा सागर।।
क्या उसका विस्तार अरे!, कहता नहीं है भाव भरे।
उसी तरह मैं गाता हूँ, जरा नहीं सकुचाता हूँ।।५।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
हे त्रिभुवन! के स्वामी देव, जो गुण तुमने पाए एव।
योगीश्वर भी कहें कभी, पूर्ण नहीं कर सकें सभी।।
मैं कैसे कह पाऊँगा, कितना जोर लगाऊँगा।
निज शक्ति न पहिचानी, तव गुण गाने की ठानी।।
बिन विचार यह यत्न सभी, नहिं विचार यह किया कभी।
पक्षी निज वाणी द्वारा, वचनालाप करें सारा।।

मैं भी स्तुति गाता हूँ, सादर शीश झुकाता हूँ।
मुझे प्रभु! आशीष मिले, मेरा निज उपमान खिले।।६।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

अभीसिप्त जनाकर्षक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
कर्म शत्रुओं के जेता, मुक्ति पथ के अभिनेता।
जिन अचिंत्य महिमा-शाली, तव स्तुति है मतवाली।।
उनकी महिमा दूर रही, नामोच्चार जो करे सही।
जग जीवों के लिए अहा, रक्षाकारी मंत्र रहा।।
गर्मी का जब अवसर हो, खिले कमल का सरवर हो।
जल कण युक्त झकोरों से, तीव्रातप की जोरों से।।
करता है सन्तुष्ट अरे, उनका सब सन्ताप हरे।
क्षण में सुखी बनाता है, मैटत सर्व असाता है।।७।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

कुपितोपदंश विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
मलयगिरि तरुवर भारी, लिपटे नाग हैं भयकारी।
बन्धन ढीले हो जाते, वन में मोरों के आते।।
कुछ भी मोर न करते हों, उनसे दूर विचरते हों।
जग में जो भी जीव कहे, कर्म बन्ध भी उन्हे रहे।।
हे भगवन्! तव आने पर, हृदय-वर्ति हो जाने पर।
कर्म बन्ध जो पाते हैं, शिथिल शीघ्र हो जाते हैं।।

नाम आपका श्रेष्ठ रहा, अतिशयकारी मन्त्र रहा।
कौन है जो कह पाएगा, महिमा को बतलायेगा।।८।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सर्व वृश्चिक विष विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
दिनकर सम आभा वाले, गायों के संग में ग्वाले।
हैं गायों के रखवाले, अति बलिष्ठ काया वाले।।
चोर देख भग जाते हैं, जरा ठहर न पाते हैं।
पशुधन चुरा नहीं पाते, शीघ्र पलायन कर जाते।।
त्रिभुवनपति जग के स्वामी, हे जिनेन्द्र! अन्तर्यामी।
वीतराग मुद्रा प्यारी, निर्विकार अतिशयकारी।।
संकट कितने हों भारी, महाभयंकर भयकारी।
सब समाप्त हो जाते हैं, नहीं कोई रह पाते हैं।।९।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

तस्कर भय विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
हैं जिनेन्द्र जग के स्वामी, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
जीवों के तारण हारे, कैसे हो सकते न्यारे।।
प्राणी सागर तरते हैं, तुम्हें हृदय में धरते हैं।
सागर पार उतरते हैं, प्राणी यह सब करते हैं।।
चर्म पात्र जल में तिरता, ऊपर-ऊपर ही फिरता।
वायु इसमें कारण है, ये ही श्रेष्ठ निवारण है।।

विभय पयोदधि तारक हे!, पतितों के उद्धारक हे।
तुमको हृदय सजाता हूँ, सादर शीश झुकाता हूँ।।१०।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

जल-अग्निभय विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर, लोकवर्ति सारे हरि हर।
कामदेव ने विजय किए, अपने वश में सभी किए।।
काम-जयी हे शिव शंकर, केवलज्ञानी तीर्थंकर।
क्षण में उसे विनाश किए, पूर्ण रूप से नाश किए।।
यह कोई आश्चर्य नहीं, तुम सम ब्रह्मा कहीं नहीं।
पानी आग बुझाता है, शांत उसे कर पाता है।।
ज्यों बड़वानल के द्वारा, भरा हुआ सागर सारा।
क्या जलने न पाता है ? वाष्प बना उड़ जाता है।।११।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

अग्निभय विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
हे जिनेन्द्र! महिमा धारी, है आश्चर्य बड़ा भारी।
तुम गौरव के धारी हो, सर्व लोक में भारी हो।।
उर में जो धारण करते, भव सागर से वह तिरते।
अति लाघव के धारी भी, रहे अधिक गुणकारी भी।।

शीघ्र पार हो जाते हैं, डूब नहीं वह पाते हैं।
महापुरुष शक्ति धारी, अतिशय महिमा है भारी।।
चिन्तन करने योग्य कहीं, विस्मय करने योग्य वहीं।
भव्य जीव श्रद्धा करते, मन को आकर्षित करते।।१२।।
हम कल्याण मंदिर स्रोत की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

जल मिष्ठता कारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
विजय क्रोध पर है पाई, प्रभो आपकी प्रभुताई।
उसका पूर्ण विनाश किया, क्षमा भाव में वास किया।।
कर्म चोर का हे भगवन्!, फिर कैसे कर दिया हनन।
है भारी आश्चर्य अहो, यह सब कैसे हुआ कहो।।
ठीक यही होता भाई, महिमा प्रभु ने दिखलाई।
नील वृक्ष वाला जंगल, देखा जाता है मंगल।।
ठंडी बर्फ कहाती है, फिर भी उसे जलाती है।
महिमा श्रेष्ठ तुम्हारी है, अतिशय विस्मयकारी है।।१३।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

शत्रु स्नेह जनक

पार्श्वनाथ दुःखकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
नित्य निरन्तर हे जिनवर, योग धारकर योगीश्वर।
तुम परमात्म स्वरूप कहे, तीन लोक में श्रेष्ठ रहे।।

हृदय कमल के मध्य प्रभो!, तुम्हें खोजते नित्य विभो!
माना हृदय हमारा है, पर स्थान तुम्हारा है।।
कहते प्राणी ठीक सभी, हमने जाना ठीक अभी।
निर्मल कांती वाले हैं, बीज श्रेष्ठ रंग वाले हैं।।
कमलों में स्थान रहा, ठीक कर्णिका मध्य कहा।
हो सकता क्या और कहीं, आप कहेंगे कहीं नहीं।।१४।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

चोरी का गत द्रव्यदायक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
हे जिनेन्द्र! महिमा धारी, सर्व जगत् मंगलकारी।
जो भी तुमको ध्याता है, भाव सहित गुण गाता है।।
क्षण में संसारी प्राणी, बन जाता केवल ज्ञानी।
देह छोड़कर जाता है, परमातम बन जाता है।।
धातु उपल जैसे भाई, अग्नि की संगति पाई।
उपल रूप न रहता है, पत्थर कोई न कहता है।।
लोक में देखा जाता है, स्वर्ण रूप को पाता है।
जग के प्राणी भी वैसे, हो जाते जिनवर जैसे।।१५।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

गहन वन-पर्वतभय विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
भव्य प्राणियों के द्वारा, हे जिनेन्द्र! तुमको प्यारा।
जिस शरीर के मध्य कभी, ध्याया करते नित्य सभी।।

उस शरीर को भी हरते, कैसे नष्ट किया करते।
नहीं समझ में आता है, क्या यह तुमको भाता है।।
वस्तु स्वरूप रहा ऐसा, हो माध्यस्थ भाव वैसा।
महापुरुष की कौन कहे, उनके यह स्वभाव रहे।।
विग्रह पूर्ण नशाते हैं, जरा नहीं सकुचाते हैं।
तभी श्रेष्ठ कहलाते हैं, सबसे पूजे जाते हैं।।१६।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

युद्ध विग्रह विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
हे जिनेन्द्र! सारे जग में, लगे हुए भक्ति मग में।
बुद्धीमानों के द्वारा, चिन्तन होता है प्यारा।।
जो अभेद बुद्धि वाले, ध्याते होकर मतवाले।
यह संसारी प्राणी भी, होते आप समान सभी।।
कहा ठीक अमृत जैसे, चिन्तन करने से वैसे।
पानी भी क्या मित्र अरे!, विष विकार न दूर करे।।
निश्चय से विष हरता है, स्वस्थ पूर्णतः करता है।
भक्ति का फल यही कहा, सर्वलोक में श्रेष्ठ रहा।।१७।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सर्प विष विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
निश्चय से मेरे भगवन्, जग के सब परवादी जन।
मोह तिमिर खोने वाले, सद्धर्मी होने वाले।।

हरि हर आदि मान रहे, भिन्न रूप पहचान रहे।
तुमको पूजा करते हैं, चरणों में सिर धरते हैं।।
कांच काम्बला का रोगी, इन्द्रिय विषयों का भोगी।
श्वेत शंख क्या न जाने, विविध वर्ण क्या न माने।
भिन्न रंग का मान रहा, उल्टा उसको ज्ञान रहा।।
ऐसे कई देखे जाते, सत्य समझने न पाते।।१८।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

नेत्र रोग विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरों।।
जिनवाणी जिन गाते हैं, धर्मोपदेश सुनाते हैं।
समय कहा अतिशयकारी, हो प्रभाव विस्मयकारी।।
नर की चर्चा दूर रही, मानो तुम यह बात सही।
शोक रहित तरु हो जाते, वह अशोक संज्ञा पाते।।
सूर्योदय हो जाने से, निज प्रभाव दिखलाने से।
वृक्ष सहित क्या जीव कभी, बोध प्राप्त न करें सभी।।
पावन ज्ञान जगाते हैं, सारे खुश हो जाते हैं।
महिमा यह जिनवर की है, न होती हर नर में है।।१९।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

उच्चाटन मोचक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
जिनवर का सानिध्य जहाँ, होते हैं आश्चर्य वहाँ।
जहाँ कोई व्यवधान नहीं, न ही बाधा रहे कहीं।।

देव कई मिलकर आते, पुष्प वृष्टि कर हर्षाते।
नीचे को डण्ठल करके, क्यों गिरते खुश हो करके।।
मानो वह सूचित करते, अपना सब कल्मष हरते।
जिनवर का सानिध्य मिले, पाने से सौभाग्य खिले।।
भव्य प्राणियों के द्वारा, कर्मों का बन्धन सारा।
नीचे सदा किया जाता, ऊपर को न रह पाता।।२०।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

शुष्क वनोपवन विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
हे जिनेन्द्र! बहु गुण धारी, जन-जन के तुम उपकारी।
गुण रत्नों के रत्नाकर, तव गंभीर हृदय सागर।।
उससे उत्थित वाणी है, अमृतमय जिनवाणी है।
दिव्य ध्वनि कहलाती है, मोक्ष मार्ग दर्शाती है।।
जो मानव श्रद्धान करे, कर्णाञ्जलि से पात्र भरे।
परमानन्दी हो जाते, निज स्वरूप में खो जाते।।
भव्य जीव जो होते हैं, कर्म कालिमा खोते हैं।
अजर अमर पद पाते हैं, मोक्ष महल को जाते हैं।।२१।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

मधुर फल प्रदायक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

हे जिनेन्द्र! मैं जान रहा, ऐसा ही कुछ मान रहा।
नीचे बहुत दूर जाते, पूर्ण नम्रता को पाते।।
फिर ऊपर को जाते हैं, उज्ज्वलता दिखलाते हैं।
मिलकर चौसठ चँवर महा, देव ढौरते श्रेष्ठ अहा।।
चँवर बोलते हैं मानो, सत्य यही तुम पहिचानो।
मुनि पुंगव के पद आते, प्राणी पद में झुक जाते।।
शुद्ध भाव धरने वाले, ऊर्ध्व गमन करने वाले।
निश्चिय से हो जाते हैं, शिव पदवी को पाते हैं।।२२।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

राज्य सम्मान दायक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

(चाल टप्पा)

स्वर्ण रचित रत्नों से सज्जित, सिंहासन भाई।
अधर विराजे उसके ऊपर, श्री जिन सुखदाई।।
दिव्य ध्वनि खिरती है पावन, जग मंगलकारी।
श्रेष्ठ साँवला तन दिखता है, शुभ अतिशयकारी।।
स्वर्णगिरि मेरू पर काले, मेघ नये जानो।
वर्षा ऋतु में करें गर्जना, मस्त हुए मानो।।
मेघों को उत्सुक होकर ज्यों, देखें श्रेष्ठ मयूर।
भव्य जीव तव दर्शन करके, करते कल्मष दूर।।२३।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

शत्रु विजय राज्य प्रदायक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

(चाल टप्पा)

हे जिनेन्द्र! तव भामण्डल शुभ, कान्ती मान रहा।
है अतिशय दैदीप्यमान जो, अनुपम श्रेष्ठ कहा।।
तरु अशोक के पत्र शीघ्र ही, कान्ति हीन होते।
भामण्डल की प्रभा के आगे, शोभा को खोते।।
फिर ऐसा है कौन सचेतन, सारे इस जग में।
श्रद्धा धारण करके बढ़ता, हो मुक्ति मग में।।
ध्यान आपका करने वाला, ज्ञानी बन जाता।
वीतरागता धारण करके, मुक्ति पद पाता।।२४।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

असाध्य रोग शामक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

(चाल टप्पा)

मोक्षपुरी के अनुपम वाहक, आप रहे भगवन्।
देव दुन्दुभि से गूँजा है, धरती और गगन।।
बजता हुआ नगाड़ा मानो, सबसे बोल रहा।
तीन लोकवर्ती जीवों से, मानो यही कहा।।
जोर शोर से बोल रहा हूँ, रे! जग के प्राणी।
तुम प्रमाद को शीघ्र छोड़ दो, करो न मन मानी।।

पार्श्वनाथ के चरण कमल की, सेवा नित्य करो।
विशद ज्ञान के द्वारा अपने, सारे कर्म हरो।।२५।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

वचन सिद्धि प्रतिष्ठायक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

(चाल टप्पा)

तीन लोक को किया प्रकाशित, तुमने हे भगवन्!
तेज पुञ्ज तव है अपूर्व शुभ, कहता है जन-जन।।
सूर्य गगन में श्रेष्ठ चमकता, जग प्रकाश होवे।
प्रभो! आपके आगे वह भी, निज कांती खोवे।।
इच्छा कर अधिकार स्वयं का, ज्यों पाने आया।
तीन छत्र का भेष बनाकर, करता है छाया।।
चमक रहे मोती छत्रों में, नभ में ज्यों तारे।
संख्यातीत रहे तारागण, हैं प्यारे-प्यारे।।२६।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

वैर विरोध विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

(चाल टप्पा)

तीन लोक का पिण्ड आप से, पूर्ण किया जाना।
हे स्वामी! तव रहा ज्ञान में, कुछ न अन्जाना।।

नाथ आपकी अनुपम कांति, है प्रताप भारी।
चतुर्दिशा में यश फैला है, शुभ मंगलकारी।।
उसी तरह माणिक्य स्वर्ण अरु, शुभ रवि के द्वारा।
निर्मित परकोटे से सज्जित, समवशरण सारा।।
चारों ओर से अनुपम शोभित, होता है भाई।
महिमा तीन लोक के प्रभुवर, की है प्रभुताई।।२७।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

यशः कीर्ति प्रसारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - स्वर्ग से आए देव, उनके मुकटों की मणी।
पूजनीय जिनदेव, दिव्य पुष्प माला सहित।।

(चौपाई मिश्रित गीता छन्द)

इन्द्र यहाँ पूजा को आते, विनय सहित चरणों झुक जाते।
उनके मुकुटों की शुभ मणियाँ, रत्न जड़ित उत्तम शुभ लड़ियाँ।।
लड़ियाँ शुभम् सब छोड़कर के, देव आते हैं यहाँ।
आश्रय चरण का प्राप्त करके, शरण में आके महाँ।।
प्राणी सु मन वाले सदा ही, रमण करते तव चरण।
हैं अन्य मिथ्या देव के, स्थान न करते वरण।।२८।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

आकर्षण कारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

सोरठा - करते पार सदैव, निज अनुयायी भक्त को।
तीर्थंकर जिनदेव, भव सिन्धु से विमुख जो।।
(चौपाई मिश्रित गीता छन्द)
भरा हुआ सागर का पानी, उसमें से इस जग के प्राणी।
पक्व घड़ा को उलटा करते, उससे सागर पार उतरते।।
पाते हैं प्राणी पार भव से , प्राप्त कर प्रभु की शरण।
अत एव जिनवर कहे जाते, जगत् में तारण-तरण।।
जिन रहित कर्म विपाक से हो, पार करते यह जहाँ।
घट सहित श्रेष्ठ विपाक से हो, पार करते हैं अहा।।२६।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

असंभव कार्यसाधक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - जग पालक जिनदेव, तीन लोक के नाथ हो।
हम क्यों रहें सदैव, निर्धन के निर्धन सदा।।
(चौपाई मिश्रित गीता छन्द)
तुम अक्षर स्वभाव के धारी, लेखन क्रिया रहित अविकारी।
क्यों कहलाते हो तुम स्वामी, मोक्ष मार्ग के हे अनुगामी!।।
शुभ मोक्ष मारग के रहे तुम, श्रेष्ठ अनुगामी प्रभो!।
अक्षर स्वाभावी नाथ हो फिर, लिपि रहित हो क्यों विभो!।।
अज्ञान के धारी कथंचित्, तुम कहे जग में अहा।
सब ही चराचर वस्तुओं का, ज्ञान है तुमको महा।।३०।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

शुभाशुभ प्रश्न दर्शक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - पूर्वोपार्जित दोष, के कारण से हे प्रभो!।
हुआ काल के दोष, यह उपसर्ग जिनेन्द्र को।।
(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)
क्रूर कमठ ने धूल उड़ाई, अतिशय रोष दिखाया भाई।
धूली कुछ भी न कर पाई, प्रभु के मन में समता आई।।
ढकने न पाई धूल तन का, स्पर्श भी न कर सकी।
है बात तन की दूर भाई, जो छाया भी न ढक सकी।।
होकर हताश कमठ स्वयं ही, धूल में फिर मिल गया।
तब मान का मर्दन हुआ, अन्तर हृदय से हिल गया।।३१।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

दुष्टता प्रतिरोधी

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - महाबली हे नाथ!, समता धारी आप हो।
झुका दिया है माथ, क्रूर कमठ ने चरण में।।
(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)
कमठ क्रूर होकर के भारी, तीव्र भयंकर गर्जनकारी।
काले-काले मेघ बनाए, धार मूसला सी वर्षाए।।
गर्जाए भारी मेघ वर्षा, भी न हानि कर सकी।
कर्मों से आतम कमठ की हो, तीव्रता से भी ढकी।।

घाव सम तलवार जैसा, कृत्य खोटा कर लिया।
अपराध का यह बोझ अपने, शीश पर भी धर लिया।।३२।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - विजयी हे उपसर्ग, ध्यान मग्न मेरे प्रभो!।
पाया है अपवर्ग, कर्म नाश कर आपने।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

इधर-उधर बिखरे थे भारी, ऊपर केश उठे भयकारी।
नर मुण्डों की माला धारी, मुख से निकल रही चिन्गारी।।
मुख से निकलती आग जिनके, क्रूर कर्मा थे सभी।
प्रेरित किए उपसर्ग हेतु, कुछ न कर पाए कभी।।
भव-भव में दुःख के हेतु, कर्मों का किया बन्धन महाँ।
संसार का कारण बनाया, कमठ ने अतिशय वहाँ।।३३।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

भूत पिशाच पीड़ा तथा शत्रु भयनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - तीन लोक के नाथ!, वे सब प्राणी धन्य हैं।
चरण झुकाते माथ, प्रभु चरणों में भाव से।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

कार्य सभी संसारी छोड़े, चिन्ताओं से मुख जो मोड़े।
तन मन से रोमाचिंत होकर, भक्ति भाव से सुधबुध खोकर।।
खोकर के सुध-बुध भक्ति से, प्रेरित हुए जो जीव हैं।
करते हैं संचय पुण्य का, कल्याणकारी अतीव हैं।।
दोनों चरण की कर रहे, आराधन जो भाव से।
वे धन्य प्राणी मुक्त होते, भक्ति रूपी नाव से।।३४।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - मुनी वृन्द में श्रेष्ठ, हे मुनीश! तुम हो परम।
पाए धर्म यथेष्ठ, संयम तप को धारकर।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

मैंने ऐसा माना भाई, भव सागर की थाह ना पाई।
नहीं कर्ण गोचर हो पाए, तुमको जान नहीं हम पाए।।
जाना नहीं है आपके शुभ, नाम रूपी मंत्र को।
अत एव जग में घूमता हूँ, नाथ मैं परतंत्र हो।।
तव नाम रूपी मंत्र सुनकर, विपद रूपी नागिनी।
क्या पास आकर न पड़ेगी, क्षमा उसको मांगिनी।।३५।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सर्व वशीकरण

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - माना यही मुनीश, भव भवान्तर में कभी।
जगती पति जगदीश, तुमको जाना है नहीं।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

इच्छित फल को देने वाली, श्री जिनेन्द्र की वैभवशाली।
चरण युगल की पूजा भाई, तीन लोक में है सुखदायी।।
सुखदायी पूजा प्रभु की शुभ, नहीं की हमने कभी।
अत एव स्वामी लोकवर्ती, आपदाएँ जो सभी।।
झकझोरती हैं चित्त को, उनका बना स्थान मैं।
हे नाथ! मेरा चित्त, लग जाए प्रभु के ध्यान में।।३६।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सकल कष्ट निवारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - निश्चय हे भगवान, मोह तिमिर से अंध हो।
होकर के अज्ञान, भटक रहा संसार में।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

पहले कभी न मेरे द्वारा, अवलोकन न हुआ तुम्हारा।
भाव सहित न दर्शन कीन्हे, व्यर्थ जन्म अपने कर लीन्हें।।
कर लिए अपने व्यर्थ सारे, जन्म जो पाए सभी।
न दर्श करने की सुधी, मन में मेरे आयी कभी।।

मम कर्म बन्धन की गति का, उदय भाई चल रहा।
ये मर्म भेदी जन्म मृत्यु, जरा दुःख जो फल रहा।।३७।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

असह्य कष्ट निवारक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - सुना आपका नाम, दर्शन भी मैंने किए।
चरणों किया प्रणाम, पूजा भी करता रहा।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

बना रहा हरदम अज्ञानी, नाथ आपकी कही न मानी।
निश्चय से न मेरे द्वारा, तुमको हृदय में कभी उतारा।।
तुमको हृदय में नहीं धारा, इसलिए संसार में।
मैं दुःख का भाजन हुआ हूँ, पड़ा भव मझधार में।।
हे स्वजन बान्धव भाव शून्य, क्रिया कोई भी कभी।
क्योंकि फलदायी न होती, व्यर्थ ही जाती सभी।।३८।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सर्व ज्वर शामक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - हे स्वामी! मुनिनाथ, दुखी जनो के बान्धव।
नाथ हमें दो साथ, शरण ग्रहण के योग्य हे!।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

करुण रूप हे करूणाधारी!, हो स्थान पुण्य के भारी।
मुनियों में तुम श्रेष्ठ कहाए, हे महेश! महिमा दिखलाए।।

श्रेष्ठ हो तुम लोक में प्रभु, योग्य भक्ति के रहे।
अत एव प्रभु योगीन्द्र तव, प्रतिपाल इस जग में कहे।।
हम नमन करते चरण में प्रभु, शरण अपनी लीजिए।
दुःखों के अंकुर जो लगे हैं, नाश उनका कीजिए।।३६।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

विषम ज्वर विघातक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - तीन लोक को नाथ, पावन करते आप हो।
चरण झुकाते माथ, भव्य जीव तव चरण में।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

अशरण के तुम शरण कहाते, प्राणी शरणागत बन आते।
प्रतिपालक हो कर्म विजेता, मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता।।
नेता हो अनुपम मोक्ष के तुम, ख्यात महिमा है प्रभो!।
तव चरण कमलों की शरण को, पा गया हूँ मैं विभो!।।
यदि आपके गुण का मनन, चिंतन नहीं जो कर सके।
फिर हम सरीखे जो अभागे, मौत उनको आ ढके।।४०।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

अस्त्र शस्त्र विघातक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
सोरठा - जग तारक भगवान, देवेन्द्रों से पूज्य हो।
करूँ विशद गुणगान, मन वच तन त्रय योग से।।

(चौपाई मिश्रित गीताछन्द)

जिसने सब वस्तु का सार, जान लिया है अपरम्पार।
जो हैं मोक्ष महल के द्वार, सर्व जगत् में मंगलकार।।
मंगल कहे हैं सर्व जग में, जो त्रिलोकी नाथ हैं।
उनके चरण में हम सभी के, झुक रहे यह माथ हैं।।
भयकार दुख का है सरोवर, नाथ रक्षा कीजिए।
मैं हूँ अपावन नाथ मुझको, अब शरण में लीजिए।।४१।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

स्त्री सम्बंधी समस्त रोग शामक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
नाथ शरण तेरी अनुपम, नाशनहारी सारे गम।
चरणाम्बुज की शुभ भक्ति, करके मैंने भी युक्ति।।
मैंने संचित की हरदम, भाव हुए मेरे उपशम।
उसके फल से हे भगवन्!, मिले आपकी मुझे शरण।।
आश्रय दाता हे भगवन्! करते हम चरणों वन्दन।
इस भव के भी साथ प्रभो!, बनना तुम मम् नाथ विभो!।।
यही भावना है स्वामी, हे मेरे अन्तर्यामी!।
विनती मम स्वीकार करो, मेरे सारे कष्ट हरो।।४२।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

सर्वबन्धन मोचक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।

हे जिनेन्द्र! मेरे भगवन्, बार-बार मेरा वन्दन।
सावधान बुद्धी वाले, तव चरणों के रखवाले।।
निर्मल है तव बिम्ब अहा, अविकारी मुख कमल रहा।
जिसने लक्ष्य बनाया है, पावन दर्शन पाया है।।
भव्य जीव उल्लास भरे, पुलकित जिनका गात अरे!।
हे स्वामी! ऐसे प्राणी, पावन है जिनकी वाणी।।
विधिवत संस्तव रचते हैं, नाम आपका भजते हैं।
हो जाए कल्याण अरे!, भाव सहित गुणगान करे।।४३।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

वैभव वर्धक

पार्श्वनाथ दुःखहारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
प्रभु की जय जयकार करो, विशद चरण में शीश धरो।।
नयन रूप कुमुदों वाले, जग के प्राणी मतवाले।
तुम हो चन्द्र समान प्रभो!, देते हो आनन्द विभो!।।
रचता जो स्तोत्र महा, उसका यह सौभाग्य रहा।
प्रभावान हो जाता है, स्वर्ग संपदा पाता है।।
फिर कर्मों का नाश करे, सारे भोग विलास करे।
शीघ्र शुभम् फल पाते हैं, मोक्ष महल को जाते हैं।।
ऐसा उत्तम कार्य करे, बन जाते हैं सिद्ध अरे!।
विशद सौख्य वह पाते हैं, लौट नहीं फिर आते हैं।।४४।।
हम कल्याण मंदिर स्तोत्र की, अनुपम गाथा गाते हैं।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

श्री नाथूराम तनुजं शुभमिष्ट कारिं।
इन्द्रर सुतं मनुज नाग सुरेश वंद्यं।।
यस्योपदेश वशताः सुखता नरस्य।
वंदामि पाद पद्मं विशदं मुनीशं।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

मलय जात सुगंधित सारया, हिम सुशीतल वारि सुधारया।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।1।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

हिम करै रिव ताप विघातनैस्, तुहिन कुंकुंम मिश्रित चंदनैस्।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।2।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सुरभि शील समुद्भव तण्डुलैः, रलिकुला कलितै रति निर्मलैः।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।3।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

वकुल चंपक पाटल मालती, कुमुद केतक कुंद सुपुष्पकैः।
विशद सिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।4।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

वटक मण्डक मोदक पुष्पकैः, सरस घेवर मुख्य चरुत्तमैः।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।5।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

विमल केवल बोध विनाशकै, रुचिर रत्न घृतादि सुदीपकैः।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।6।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

नयन नाशिक शर्म्म विधायकै-रगुरु रोहणि वृक्षज धूपकैः।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।7।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मधुर बंधु रसाल तरुद्भवैः, क्रमुक मोचक आम्र फलोत्तमैः।
विशदसिंधु गुरुवर गण नायकान्, प्रवियजे सद् द्रव्य समर्चितान्।।8।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल सुचंदन तंदुल पुष्पकैः, चरु सुदीपक धूप फलार्घ्यकैः।
कनक पात्र गतार्घ-महं-मुदा, सुमति कीर्ति-रहं प्रयजे सदा।।9।।

ॐ ह्रूं प.पू.आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इत्यमीभि समाराध्य, पूजा द्रव्यं श्रुतं वरं।
भव संताप विच्छेदा, शांति धारा विधीयते।।
शांत्ये शांति शांतीधारा
द्वादशांगोगिनीं भास्वद्, रत्नत्रय विभूषणां।
सर्व भाषात्मकं स्वच्छ, गुरु पद-मुपास्महे।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

विशुद्ध बुद्धिक पयोधि चन्द्रं, प्रबोधसूर्यं विशदं मुनीन्द्रं।
सम्यक्त्व ज्ञानं महासमुद्रं, महामि आचार्य गुरुं सुरेन्द्रं।।

छंद- बसंततिलका

संसार सागर निमज्जद-पूर्व नौका ।
सिद्धौषधिर् विविध पाप विनाशने यः।।

निःशेष लब्धि बल बोध तरोश्च बीजं।
आचार्य वर्य गुरुवर विशदं मुनीन्द्रः।।1।।
सूर्यः सहस्रः किरणैर् हरित तमांसिः।
सिंहो यथा गज गणाश्च नखैर् निहन्ति।।
संसार वर्ति दुरितानि तथैव मूर्ति।
आचार्य वर्य गुरुवर विशदं मुनीन्द्रः।।2।।
यः सर्व दुःख दलने किल कल्पवृक्षः।
चिंतामणिः शुभ मनोरथ पूरणे सः।।
कंदर्प-दर्प दहनैक विधौ दवाग्निः।
आचार्य वर्य गुरुवर विशदं मुनीन्द्रः।।3।।
पद्मा करे रुचिर रश्मि-रिवौषधीशः।
शीघ्रं प्रबोधयति निद्रित-कैरवाणि।।
अंतः सुषुप्त गुण पद्म दलानि चैवं।
आचार्य वर्य गुरुवर विशदं मुनीन्द्रः।।4।।
भक्त्या दधाति हृदि यो ननु मंत्र राजं।
दिव्यां गतिं व्रजति नूतन मुक्ति मोदं।।
चूर्णी करोति भव संचित कर्म शैलं।
आचार्य वर्य गुरुवर विशदं मुनीन्द्रः।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागराय मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यद्दर्श नाम तपतः सद्भक्त लोके।
पापं प्रयाति विलयं क्षण मात्रतो हि।।
सूर्योदये सति यथा तिमिरस् तथास्तं।
वंदामि भव्य सुखदं विशदं मुनीन्द्रं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य विशद सागर जी महाराज की आरती

(तर्ज : माई री मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा....।)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के .....

ग्राम कूपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

कल्याण मंदिर स्तोत्र पूजा

स्थापना

कुमुद चन्द्र आचार्य प्रवर जी, किए पार्श्व जिन का गुणगान।
हुआ प्रसिद्ध लोक में पावन, कल्याण मंदिर स्तोत्र महान॥
जिनकी अर्चा करने को हम, करते यह स्तोत्र विधान।
हृदय कमल में पार्श्व प्रभू का, विशद भाव से है आह्वान॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्र व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र!
अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

भोगों में लीन रहे प्रभुवर, इसमें ही सदा लुभाए हैं।
भौतिक पदार्थ में सुख माना, वह पाकर के हर्षाए हैं॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

सन्तप्त हृदय मेरा प्रभुवर, चन्दन से ना शीतल होता।
हम नित्य कषाए करते हैं, पछताते औ जीवन खोता॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

प्रभु बाह्याभ्यान्तर शुद्ध रहें, अक्षत सम गुण प्रभु तेरे हैं।
हम भटक रहे चारों गति में, ना मिटे जगत के फेरे हैं॥

कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान नि. स्वाहा।

उपवन के पुष्प रहे अनुपम, ना पुष्प आपसा कोई है।
अफसोस है ज्ञानी यह आतम, फिर भी अनादि से सोई है॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

नाना व्यंजन खाये हमने, फिर भी मन में ना शांति हुई।
चेतन को भोजन दिया नहीं, जिससे जीवन में भ्रान्ति हुई॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

दीपक जग का तम खोता है, आतम का तम ना मिटता है।
अन्तर में जले ज्ञान दीपक, कर्मों का राजा पिटता है॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

आँधी कर्मों की चले विशद, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
जो ध्यान करे निज आतम का, वह मोक्ष महाफल पाता है॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

पथ मिले हमें बाधाओं के, अब दूर करें वे बाधाएँ।
जग की उलझन में उलझ रहे, सब छोड़ विशद मुक्ती पाएँ॥
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- कल्याण मंदिर स्तोत्र का, किया यहा गुणगान।
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
भक्ती के फल से सभी, पाएँ सौख्य अपार॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

कल्याण मंदिर विधान की अर्घावली

दोहा- कल्याण मंदिर स्तोत्र यह, पूजा करें विधान।
भाव सहित जो भी करें, पावे जग सम्मान॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

(चौपाई)

हे कल्याण धाम गुणगान, भव सर तारक पाते महान।
शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम॥ १॥

ॐ ह्रीं भव समुद्र तरणे पोतायमान कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- कल्याण मंदिर स्तोत्र के, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि की पूजते, पाने स्व पद अनर्घ्य॥

(अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

(चौपाई)

हे कल्याण धाम गुणगान, भव सर तारक पाते महान।
शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम॥ १॥

ॐ ह्रीं भव समुद्र तरणे पोतायमान कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सागर सम है गौरववान, सुर गुरु न कर सके बखान।
भंजन किया कमठ का मान, तब करता प्रभु मैं गुणगान॥ २॥
तव स्वरूप प्रभु अगम अपार, मंदबुद्धि न पावे पार।
प्रखर सूर्य ज्यो आभावान, उल्लू देख सके न आन॥ ३॥
मोह की भी हो जाए हान, कह पावें तब को गुणगान।
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय॥ ४॥
तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।
ज्यो बालक निज बॉह पसार, उद्यत करने सागर पार॥ ५॥
तव गुण गाने को लाचार, योगिजन भी माने हार।
ज्यो पक्षी बोले निज बान, त्यों करते हम तव गुणगान॥ ६॥
तब महिमा जिन अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।
पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय॥ ७॥
मन से ध्यायें जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हो शिथिल तुरन्त।
बोले ज्यो चन्दन तरु मोर, नाग डरे भागे चहुँ ओर॥ ८॥

पूर्णार्घ्यं

दोहा- अष्टम वसुधा प्राप्त हो, हमको हे भगवान।
अष्ट द्रव्य के अर्घ्य से, करते हम गुणगाान॥

ॐ ह्रीं अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन दर्शन यों विपद नशाय, सूर्योदय से तम नश जाय।
निशि में पशु ज्यसों घेरें चोर, देख ग्वाल को भागें चोर॥ ९॥
भविजन तारक आप जिनेश, भवि जीवों के लिए विशेष।
मसक कराए सिन्धु पार, त्यों जन करते जिन उद्धार॥ १०॥
काम से ज्यों हारे सब देव, विजय आप कीन्हे जिनदेव।
जल अग्नि का करे दे विनाश, बड़वानल फिर करें विनाश॥ ११॥
गुणानन्त है को गिन पाय, तुलना किसी से ना हो पाय।
प्रभु की महिमा अगम अपार, हृदय धरे पाए भव पार॥ १२॥
प्रथम किए प्रभु क्रोध विनाश, कर्म किए फिर कैसे नाश।
बर्फ वृक्ष को ज्यों झलसाय, शत्रु क्षमा से जीता जाय॥ १३॥
श्रेष्ठ महर्षि महिमा गासय, हृदय में अन्वेषण कर ध्याय।
बीज कर्णिका में उपजाय, हृदय में निज आतम को ध्याय॥ १४॥
ज्यों अग्नि में जल पाषाण, स्वर्ण रूपता पाय महान।
त्यों प्रभु का करके भवि ध्यान, पाए वीतराग विज्ञान॥ १५॥
बिठा देह में प्रभु को ध्याय, फिर तन को क्यों नाश कराय।
विग्रह जीव का रहा स्वभाव, सत्पुरुषों का है यह भाव॥ १६॥
हो अभेद प्रभु का कर ध्यान, योगी होवे प्रभु समान।
अमृत मान नीर का पान, कर क्यों होय ना रोग निदान॥ १७॥
माने हरिहर ब्रह्मा रूप, अज्ञानी जिन का स्वरूप।
हुआ पोलिया रोग समान, शंख पीत दीखे यह मान॥ १८॥

होय देशना प्रभु के पास, तरु अशोक का शोक विनाश।
प्रातः होते ही तरु बोध, निद्रा तज ज्यों पाए विबोध॥ १९॥
पुष्प वृष्टि करते हैं देव, ऊर्ध्व पाँखुरी रहे सदैव।
डण्ठल कहे ये प्रभु के पास, आते हो कर्मों का नाश॥ २०॥
दिव्य ध्वनि प्रभु की गम्भीर, सुधा समान हरे भव पीर।
आकुलता का करे विनाश, अक्षय सौख्य दिलाए खास॥ २१॥
चौसठ चंवर ढुराते देव, विनय शील हो झुके सदैव।
विनयशील जो करे प्रणाम, प्राप्त करे वो मुक्ति धाम॥ २२॥
सिंहासन पर श्री जिनेश, दिव्य ध्वनि प्रगटाए विशेष।
जयो मेरू पे मेघ समान, हर्षित मोर करे गुणगाान॥ २३॥
भामण्डल है आभावान, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ महान।
भव्य जीव जो जिन के पास, आके पाए मोक्ष निवास॥ २४॥

पूर्णार्घ्यं

दोहा- सोलह कारण भावना, भा बनते तीर्थेश।
वह पद पाने हम यहाँ, देते अर्घ्य विशेष॥

ॐ ह्रीं षोडशतल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

देवों से हो दुन्दुभि नाद, मानों कहे तजो उन्माद।
मुक्ति की मन में जो चाह, जिन पद करो विशद अवगाह॥ २५॥
त्रिभुवन पति के सिर हैं तीन, छत्र कहे हे ज्ञान प्रवीण।
तीन रूप ज्यों चाँद दिखाय, खुश हो प्रभु सेवा को आय॥ २६॥
स्वर्ण रजत माणिक के (कोट) साल, प्रभु का वैभव रहा विशाल।
तेज कांतिमय प्रभु यशवान, समवशरण शुभ रहा महान॥ २७॥
इन्द्रों के मुकुटों की माल, जिन पद झुकते गिरे विशाल।
मानो जिन पद में जो आय, चरणों छोड़ फिर कहीं ना जाय॥ २८॥

गहन जलाशय को भी पाय, घड़ा अधोमुख पार कराय।
संत विमुख भव सिन्धु से जन, भव तारक हैं पोत महान॥ २९॥
त्रिभुवन पति निर्धन कहलाय, अक्षर कोई लिख ना पाय।
है त्रिकाल ज्ञाता अज्ञान, ज्ञाता सर्व चराचर जान॥ ३०॥
कमठ गगन से धूल गिराय, प्रभु तन को जो छू ना पाय।
तिरस्कार की दृष्टिवान, कर्म बन्ध जो किया महान॥ ३१॥
मेघ गरज बिजली चमकाय, जल वृष्टि जो भीम कराय।
प्रभु का कुछ भी ना कर पाय, निज पद में जो खड्ग गिराय॥ ३२॥
नूर मुण्डन की धारी माल, बदन से निकले अग्नि ज्वाल।
प्रेतादिक तप करने भंग, भेज कर्म का पाया बंध॥ ३३॥
हर्षभाव से जिन पद जाय, माया तज त्रय काल में आय।
विधिवत अर्चा करे कराय, भव-भव के वह कर्म नशाय॥ ३४॥
भव-भव के दुख सहे विशेष, नाम सुना ना कभी जिनशे।
मंत्र बोल सुनता जो नाम, विपद नाश हो पाए ध्रुव धाम॥ ३५॥
पूजा वांछित फल दातार, की ना आए प्रभु के द्वार।
सहा हृदय भेदी अपमान, शरण आय पाए सम्मान॥ ३६॥
मोहाच्छदित रहे विशेष, देख सके ना तुम्हे जिनेश।
मर्म भेदि कुवचन हे देव, पर संगति से सहे सदैव॥ ३७॥
अर्चा पूजा की (तव) पद आन, हृदय धरेना किन्तु पुमान।
भाव शून्य भक्ति कर देवा, फलदायी ना रही सदैव॥ ३८॥
शरणागत जन दीनदयाल, पतितोद्धारक हे प्रतिपाल।
झुका रह तव पद में शीश, दूर करो दुख दो आशीष॥ ३९॥
अशरण शरण जगत प्रतिपाल, गुणानन्त धर दीनदयाल।
तव पद में रह किया ना ध्यान, सहे कर्म धन घात महान॥ ४०॥

सुर वन्दित हे दया निधान, जग तारक जगपति भगवान।
दुखियों का करते उद्धार, दुख सिन्धु से कर दो पार॥ ४१॥
किन्चित पुण्य से भक्ति जिनेश, हे प्रतिपालक पाई विशेष।
भव-भव में मेरे भगवान, भक्त बनें आदर्श महान॥ ४२॥
हे जिन! सद्बुद्धि धर आन, दर्श करें खुश हो भगवान।
संस्तव कर सुविधि युत मान, वे पावे सुर पद निर्वाण॥ ४३॥
जन मनरंजक हे कुमुदेश, सुर पद हेतु स्वर्ग प्रवेश।
किन्चित काल भोग (नर-नाथ) भूपेश, कर्म नाश हो 'विशद' जिनेश॥ ४४॥

पूर्णार्घ्यं

दोहा- विशंति दल पूजा करे, पाने शिव सोपान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं विशंति दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्रराध्य श्री पार्श्वनाथय जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला